



हिन्दी में प्रकाशित होने वाला सबसे लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र 'सद्भावना टुडे' में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें :-

011-43678240

E-mail

story@sadbhawna.today
sadbhavnatoday@gmail.com
web: www.sadbhawna.today

एक नजर

इंदिरा-राजीव को लेकर मोदी की ओखी टिप्पणी ठीक नहीं: खड़गे

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को हिदायत देते हुए कहा है कि श्री मोदी को समझना चाहिए कि अमेठी और रायबरेली के साथ गांधी परिवार का सौ साल पुराना रिश्ता है इसलिए पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी तथा राजीव गांधी को लेकर उन्हें हल्की टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। श्री खड़गे ने कहा, गांधी परिवार ने देश को अस्थावर सेवा की है। इंदिरा गांधी और राजीव गांधी ने खुद को देश के लिए कुर्बान किया है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तो अपनी हज़ारों करोड़ रुपये की संपत्ति देश के नाम कर दी थी। उन्होंने कहा, कांग्रेस पार्टी के साथ राय बरेली और अमेठी का रिश्ता 100 साल का है। मोदी जी आज उसी गांधी परिवार को गाली देने नहीं थकते। वे इंदिरा गांधी जी और राजीव जी पर भी अपनी ओखी राजनीतिक टीका-टिप्पणी करते हैं। वह भूल जाते हैं कि वह देश के दो पूर्व प्रधानमंत्रियों के बारे में बात कर रहे हैं, जिन्होंने इस देश के लिए अपना सब कुछ लुटा दिया। यहाँ तक की अपनी राजनीती की कुर्बानि कर दी। कांग्रेस नेता ने कहा, राजीव जी की शहादत का मजाक उड़ाने के लिये कहते हैं कि वह एखा कानून लाए जिससे वह इंदिरा जी की संपत्ति हड़प सकें। मगर मोदी जी भूल जाते हैं कि पंडित नेहरू ने अपनी 98 प्रतिशत सम्पत्ति देश को समर्पित कर दी थी। जिसकी आज कुल कीमत करीब 12 हजार करोड़ रुपये होगी। इंदिरा गाँधी जी ने हमारी सेना के लिए अपने गहने तक दे दिए।

एक दशक में मिले 51.40

करोड़ रोजगार: अनुराग

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री और डिजाइन के हनीरूप से भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी अनुराग सिंह ठाकुर ने बेरोजगारी और रोजगार के मुद्दे पर इंडिया समूह के दावों को आमक व खोखला बताते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी सरकार में रोजगार सृजन की दिशा ऐतिहासिक कीर्तमान बनने व रिपोर्ट रोजगार मिलने का दावा किया है। श्री ठाकुर ने कहा, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की नीतियों से भारत में पिछले एक दशक में रोजगार सृजन की दिशा में अनूत्पूर्व कार्य हुए हैं। रोजगार के मुद्दे पर इडी अलायंस लगातार झूठ बोल कर देश को गुमराह कर रहा है। स्कोप समूह द्वारा पिछले 10 वर्षों में भारतीय रोजगार सृजन पर जारी रिपोर्ट ने विपक्ष के झूठे दावों की पोल खोल दी है। मोदीनीमित्स के इस शानदार उदाहरण ने रोजगार पर विपक्षी आमक प्रचार की जड़ों को हिला दिया है। स्कोप की रिपोर्ट में सामने आया है की मोदी सरकार के पिछले 10 वर्षों में 51.40 करोड़ रोजगार सृजित हुए हैं जो कि दिखाता है की मोदी सरकार की नीतियों से एक दशक में रोजगार के कितने अवसर मिले।

राजग गठबंधन एक महत्वपूर्ण जीत के लिये तैयार है: मोदी

नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र में विपक्षी महा विकास अघाड़ी (एमवीए) पर तीखा हमला बोला और दावा किया

नासिक, एजेंसी। प्रधानमंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के स्टार प्रचारक नरेंद्र मोदी ने बुधवार को महाराष्ट्र में विपक्षी महा विकास अघाड़ी (एमवीए) पर तीखा हमला बोला और दावा किया कि जैसा कि एमवीए के एक प्रमुख नेता ने संकेत दिया है कि भाजपा-राजग लोकसभा चुनावों में एक महत्वपूर्ण जीत के लिये तैयार है। एमवीए में कांग्रेस, शिवसेना-उद्धव गुट और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी शामिल हैं। उत्तरी महाराष्ट्र में जिले के डिंडोरी शहर में एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुये उन्होंने देश में विकसित राजनीतिक परिदृश्य के बारे में चर्चा करते हुये कहा, राजग गठबंधन एक महत्वपूर्ण जीत के लिये तैयार है, जैसा कि गठबंधन के एक प्रमुख नेता ने संकेत दिया है। उन्होंने दावा करते हुये कि कांग्रेस विपक्ष के नेता पद का दावा करने के लिये पर्याप्त सीटों सुरक्षित नहीं कर पायेगी।

मोदी ने बाल ठाकरे का उद्धृत करते हुये कहा, जिस दिन मुझे लगेगा कि शिव सेना कांग्रेस में तब्दील हो गयी है, मैं शिव सेना को भंग कर दूंगा। अब जो कुछ भी सामने आ रहा है, वह बाला साहेब की इच्छा के अनुरूप है। प्रधानमंत्री ने अपना हमला जारी रखते हुये टिप्पणी की, नकली शिव सेना (यूवीटी का जिऊ) ने बाल ठाकरे के हर सपने को चकनाचूर कर दिया है। उनके विजन में अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण और जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को खत्म करना शामिल था। जबकि ये सपने पूरे हो गये हैं, नकली शिवसेना सबसे ज्यादा नाराजगी दिखा रही है और कांग्रेस की तरह उन्होंने मंदिर के अभिषेक के निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा, जबकि कांग्रेस सदस्य राम मंदिर के बारे में नफरत फैला रहे हैं, नकली शिवसेना चुप है। उनकी पापी साझेदारी पूरे महाराष्ट्र के सामने उजागर हो गयी है। श्री मोदी ने शिव सेना के कथित विश्वासघात के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि इस तथ्य के बावजूद कि कांग्रेस



ने लगातार वीर सावरकर को गाली दी है नकली शिव सेना अब कांग्रेस का समर्थन कर रही है। उन्होंने कहा कि इस विश्वासघात ने महाराष्ट्र के स्वाभिमानी और देशभक्त लोगों को क्रोधित किया है और दावा किया इसके बावजूद नकली शिवसेना पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। प्रधानमंत्री ने जनसभा में मौजूद लोगों से पूछा, क्या इस नकली शिवसेना को दंडित नहीं किया जाना चाहिए, जिसने कांग्रेस के सामने आत्मसमर्पण किया है। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए श्री मोदी ने कहा, आज मैं पहली बार सभी 140 करोड़ देशवासियों को यह बताने जा रहा हूँ। यह एक गंभीर विषय है जिस पर ध्यान देने की जरूरत है। कांग्रेस का मानना है कि सरकार के बजट का 15 फीसदी हिस्सा विशेष रूप से अल्पसंख्यकों को

आर्वाटित किया जाना चाहिए। अनिवार्य रूप से धर्म के आधार पर बजट आवंटन, कई साल पहले कांग्रेस ने धर्म के आधार पर बजट आवंटन के इस विचार को मंजूरी दी थी। बस आप कल्पना करें कि यह विचार कितना विनाशकारी है। कांग्रेस के विभाजनकारी एजेंडे पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री ने टिप्पणी की कि कांग्रेस के लिए, केवल एक अल्पसंख्यक है वह है उसका पसंदीदा वोट बैंक। उन्होंने कहा, मुझे स्पष्ट रूप से याद है, गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में मेरे कार्यकाल के दौरान, जब कांग्रेस ने बजट का 15 प्रतिशत विशेष रूप से मुसलमानों पर खर्च करने का प्रस्ताव रखा था। मैंने इसका पुरजोर विरोध किया और भाजपा के मजबूत विरोध के कारण कांग्रेस अपने प्रयास में विफल रही।

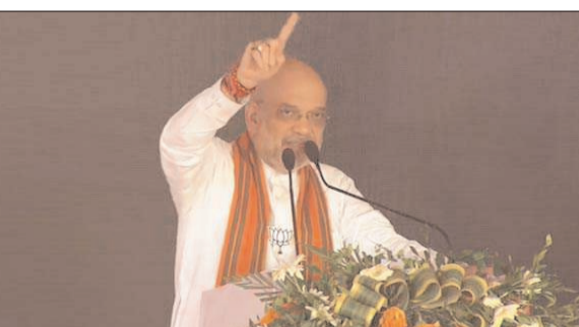
दो वाहनों की टक्कर के बाद आग लगने से छह लोगों की जलकर मौत



बापटला, एजेंसी। आंध्र प्रदेश में बापटला जिले के इंदुरिपलेम गांव में निजी ट्रेवल बस और लॉरी की टक्कर के बाद आग लग जाने से छह लोगों की जलकर मौत हो गई है। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि चिलकलुरिपेट मंडल में मंगलवार तड़के हुई इस दुर्घटना में 20 अन्य घायल हो गए। चिलकलुरिपेट पुलिस उपाधीक्षक (डीएसपी) बर्मा ने मीडिया को बताया कि निजी बस 42 यात्रियों को लेकर चाइनांगम से हैदराबाद जा रही थी। रात करीब दो बजे टिपर लॉरी से इसकी टक्कर हो गई और देखते ही देखते बस में आग की लपटें उठने लगीं। उन्होंने बताया कि बस चालक, लॉरी चालक और बस में यात्रा कर रहे चार यात्रियों सहित छह लोगों की जलकर मौत हो गई। मृतकों में तीन एक ही परिवार के थे। मृतकों में से पांच की पहचान

उपगुंडुर काशी ब्रह्मेश्वर राव (64), उनकी पत्नी उपगुंडुर लक्ष्मी (55) और उनकी पोती मुण्गाराजु साईश्री (9), हरि सिंह (टिपर चालक, मध्य प्रदेश के थे) और अंजी (35) बस चालक के रूप में की गई। दुर्घटना में कम से कम 20 बस यात्री घायल हो गए और उन्हें गुंटूर के चिलकलुरिपेट में जेजीएच और एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। बस में यात्रा करने वाले ज्यादातर यात्री हैदराबाद के थे और चुनाव में वोट डालने के लिए चिराला और चिनजंगम गए थे। उन्होंने बताया कि बस का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था, इसलिए बस यात्री बच नहीं सके, जिसके कारण चार बस यात्रियों की मौत हो गई। चिलकलुरिपेट से दमकल की एक गाड़ी मौके पर गई और आग बुझाई लेकिन तब तक बस पूरी तरह जल चुकी थी। आंध्र प्रदेश के राज्यपाल एस अब्दुल नजीर ने सड़क दुर्घटना पर गहरा दुख और पीड़ा व्यक्त की है। उन्होंने शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की और अधिकारियों को घायल व्यक्तियों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करने का निर्देश दिया। पूर्व मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबु नायडू ने भीषण सड़क दुर्घटना और छह लोगों की मौत पर गहन दुख व्यक्त किया है।

अपने 25 साल के शासन में ओडिशा को 50 साल पीछे ले गये नवीन: अमित शाह



सोरोदा, एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक को कड़ी आलोचना करते हुए बुधवार को कहा कि उन्होंने अपने 25 साल के शासन के दौरान राज्य को 50 साल पीछे धकेल दिया है। श्री शाह ने सतारूद बीजू जनता दल (बीजद) का गढ़ माने जाने वाले गंजम जिले के सोरोदा में एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कहा कि नवीन पटनायक सरकार के दिन एक जून को खत्म हो जाएंगे जब ओडिशा के लोग उन्हें अलविदा

कह देंगे और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को सत्ता में लाएंगे। उन्होंने मोदी सरकार की ओर से शुरू की गयी आयुष्मान भारत योजना, वन नेशन वन राशन और अन्य केंद्रीय कल्याणकारी योजनाओं को लागू नहीं करने के लिए श्री पटनायक की आलोचना की। उन्होंने कहा कि जिस दिन राज्य में भाजपा का मुख्यमंत्री शपथ लेगा, उस दिन श्री जगन्नाथ मंदिर के चारों द्वार भक्तों के लिए खोल दिए जाएंगे और रत्न भंडार की जांच रिपोर्ट छह दिन के भीतर सार्वजनिक कर दी जाएगी। उन्होंने मुख्यमंत्री से पूछा कि रत्न भंडार की असली चाबी कहाँ है और डुप्लीकेट चाबी किसने बनायी। मुख्यमंत्री पर राज्य में भोले-भाले निवेशकों को लुटने वाली चिटफंड कंपनियों को बचाने का आरोप लगाते हुए श्री शाह ने लोगों को आश्वासन दिया कि सत्ता में आने के 18 महीने के भीतर भाजपा उन लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करेगी, जिन्होंने लोगों का निवेश लूटा है।

नेशन वन राशन' योजना लागू की जायेगी। केंद्रीय गृह मंत्री श्री जगन्नाथ मंदिर के चारों द्वार श्रद्धालुओं के लिए नहीं खोलने और मंदिर के रत्न भंडार (मंदिर के खजाने) की जांच रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं करने के लिए भी श्री पटनायक की आलोचना की। उन्होंने कहा कि जिस दिन राज्य में भाजपा का मुख्यमंत्री शपथ लेगा, उस दिन श्री जगन्नाथ मंदिर के चारों द्वार भक्तों के लिए खोल दिए जाएंगे और रत्न भंडार की जांच रिपोर्ट छह दिन के भीतर सार्वजनिक कर दी जाएगी। उन्होंने मुख्यमंत्री से पूछा कि रत्न भंडार की असली चाबी कहाँ है और डुप्लीकेट चाबी किसने बनायी। मुख्यमंत्री पर राज्य में भोले-भाले निवेशकों को लुटने वाली चिटफंड कंपनियों को बचाने का आरोप लगाते हुए श्री शाह ने लोगों को आश्वासन दिया कि सत्ता में आने के 18 महीने के भीतर भाजपा उन लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करेगी, जिन्होंने लोगों का निवेश लूटा है।

योगी आदित्यनाथ के साथ मोहन यादव ने किया रोड शो

झांसी/भोपाल। उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने आज उत्तरप्रदेश और झांसी संसदीय क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) प्रत्याशी के पक्ष में चुनाव प्रचार अभियान के तहत रोड शो किया। रोड शो के दौरान दोनों नेताओं ने सड़क किनारे मौजूद लोगों का अभिवादन स्वीकार किया और लोगों ने अपने अपने अंदाज में उनका स्वागत किया। भाजपा नेताओं पर फूल बरसाकर उनका स्वागत भी किया गया। इस मौके पर डॉ यादव ने कांग्रेस को निशाने पर लेकर आरोप लगाया कि इस दल ने हमेशा ही धर्म का विरोध किया है, जबकि भाजपा धर्म की पक्षधर है। भाजपा सबका साथ-सबका विकास की नीति पर भरोसा करती है। वे अपने संबोधन में भगवान श्रीकृष्ण का नाम लेना भी नहीं भूले और उन्होंने कहा कि भाजपा सबके हित में कार्य करने वाली पार्टी है।

भाजपा जो कहती है वो करके दिखाती है: राजनाथ



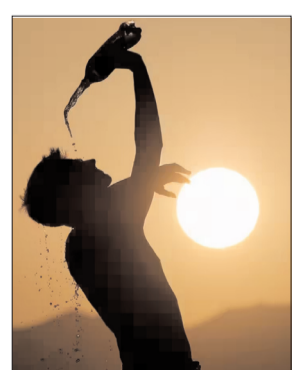
संजय सिंह, वरिष्ठ पत्रकार लखनऊ। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं है, भाजपा जो कहती है वह करके दिखाती है। अपने संसदीय क्षेत्र लखनऊ में भाजपा प्रत्याशी के तौर पर एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए श्री सिंह ने कहा कि प्रदेश मुख्यमंत्री रहते जो कार्य वो न कर सके वह भी योगी आदित्यनाथ के करिश्माई नेतृत्व ने कर दिखाया है। उन्होंने कहा कि आज मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यों की चर्चा न केवल देश में बल्कि पूरी दुनिया में हो रही है। अमीनाबाद में आयोजित रैली में पहुंचे राजनाथ सिंह आंध्र प्रदेश की एक रैली में आई पैरों में चोट के कारण संक्षिप्त भाषण ही दे सके। उन्होंने बताया कि ज्यादा देर तक खड़े रहने में वो असमर्थ हैं।

अपने संबोधन में राजनाथ सिंह ने कहा कि सीएम योगी ने प्रदेश में करिश्माई काम किया है, जिसकी कल्पना नहीं की जा

जब हमें स्पष्ट बहुमत प्राप्त होगा तो हम क्या क्या करेंगे। 2014 में हमारी स्पष्ट बहुमत के साथ सरकार बनी। हमने बहुमत मिलते ही कश्मीर से धारा 370 को समाप्त करने का काम किया। जम्मू कश्मीर का तेजी से विकास हुआ है। कांग्रेस का तेजी से हिन्दुस्तान का शायद ही कोई राज्य रहा हो जहाँ आतंकी घटना नहीं हुई। आज कश्मीर में एक दो बड़ी वारदात को छोड़कर देश में कहीं आतंकी घटना नहीं हुई है। आज अयोध्या में राममंदिर बन गया है। राम अपनी कृत्या से भव्य मंदिर में विराजमान हो चुके हैं। अब भारत में रामराज्य हो कर रहेगा। उन्होंने कहा कि आज भारत की प्रतिष्ठा पूरी दुनिया में बढ़ी है। भारत के प्रति धारणा बदल चुकी है। दुनिया मान चुकी है कि भारत विश्व का ताकतवर देश बन चुका है। जब मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री थे तब हमारा देश अर्थव्यवस्था के मामले में दुनिया में 11वें स्थान पर था, आज मोदी जी के नेतृत्व में हम पांचवें स्थान पर पहुंच गये हैं।

उत्तर-पश्चिम भारत और पूर्वी भारत में 18 मई से लू चलने के आसार

नई दिल्ली, एजेंसी। उत्तर-पश्चिम भारत में गुरुवार से और पूर्वी भारत में 18 मई से लू चलने के आसार हैं। मौसम विज्ञान केन्द्र (आईएमडी) के अनुसार, पश्चिम राजस्थान, पंजाब, दक्षिण हरियाणा, पूर्वी राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बिहार के अलग-अलग इलाकों में 16-19 मई तक लू चलने का अनुमान है।



मौसम अधिकारियों ने कहा, पंद्रह से 17 मई के दौरान गुजरात में अलग-अलग इलाकों में लू चलने के आसार हैं। कोंकण में 15-16 मई, सौराष्ट्र और कच्छ में 16-17 मई, दिल्ली, झारखंड, गैंगटिक पश्चिम बंगाल और ओडिशा 18-19 मई को लू चलने का अनुमान है। दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत में 20 मई तक

19 मई, असम और मेघालय में 17-19 तक अलग-अलग स्थानों पर भारी बारिश का अनुमान है। दक्षिण पश्चिम मानसून के दक्षिण अंडमान सागर, दक्षिण पूर्व बंगाल की खाड़ी के कुछ हिस्सों और निकोबार द्वीप समूह में 19 मई को आगे बढ़ने के आसार हैं। असम, मेघालय, त्रिपुरा, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और बिहार में बुधवार-गुरुवार को गर्म और आर्द्र मौसम रहने का अनुमान है। अगले चार दिनों के दौरान, उत्तर-पश्चिम और पूर्वी भारत के कई हिस्सों में अधिकतम तापमान में लगभग 3-4 डिग्री सेल्सियस, मध्य क्राइडकल, केरल, माहे, तटीय और कर्नाटक में अलग-अलग क्षेत्रों में आज से 19 मई को भारी वर्षा के आसार हैं। अरुणाचल प्रदेश में 16-

एक नजर

घोषणा पत्र “दिल्ली न्याय संकल्प” जल्द रिलीज होंगे: अनिल चौधरी

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी कार्यालय में सेन्ट्रल मेनिफेस्टो कमेटी के चेयरमैन व पूर्व प्रदेश अध्यक्ष चौ. अनिल कुमार की अध्यक्षता में आज मेनिफेस्टो कमेटी की बैठक हुई। बैठक में चर्चा हुई कि दिल्ली की तीनों लोकसभाओं जहां कांग्रेस उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं, उनके लिए तैयार हो रहे अलग-अलग घोषणा पत्र “दिल्ली न्याय संकल्प पत्र” बनाकर उसे पेश किया जाएगा। बैठक में चौ. अनिल कुमार के अलावा अनिल भारद्वाज, चतर सिंह, अमिताभ दूबे, प्रदेश महिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पा सिंह, एडवोकेट सुनील कुमार, राजेश गर्ग और अब्दुल वाहिद कुरैशी मौजूद थे। अनिल कुमार ने बताया कि तीनों लोकसभाओं के ड्राफ्ट मेनिफेस्टो लगभग तैयार हो चुके हैं और जल्द ही उन्हें फाइनल करके तीनों लोकसभाओं के दिल्ली न्याय संकल्प पत्र दिल्ली प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और दिल्ली के प्रभारी को सौंप दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि मेनिफेस्टो कमेटी के सदस्यों से मांगे गए सभी सुझावों को दिल्ली के घोषणा पत्र में शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि केन्द्र के तहत आने वाले दिल्ली के विषयों को लेकर भी चर्चा हुई। अनिल कुमार ने कहा कि चाँदनी चौक लोकसभा, उत्तर पूर्वी दिल्ली और उत्तर पश्चिमी दिल्ली के लिए अलग-अलग दिल्ली न्याय संकल्प को जल्द ही रिलीज किए जाएंगे।

दिल्ली में 18 मई को पीएम मोदी और राहुल गांधी करेंगे जनसभा, तैयारी शुरु

नई दिल्ली। दिल्ली में लोकसभा चुनाव के लिए 25 मई को मतदान होना है। इसको लेकर सभी पार्टियां पूरी तरह जोर आजमाइश कर रही हैं। इसको लेकर दिल्ली में अब प्रचार प्रसार तेज हो गया है। राजधानी दिल्ली में 18 मई को दो बड़े नेता आने-सामने होंगे। एक तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गोंडा विधानसभा में बड़ी जनसभा को संबोधित करेंगे। वहीं, दूसरी तरफ कांग्रेस नेता राहुल गांधी चांदनी चौक में जनसभा करेंगे। दोनों दिल्ली में अलग-अलग जगह पर जनसभा करेंगे और अपनी पार्टी के समर्थन में वोट मांगेंगे। गोंडा विधानसभा उत्तर पूर्वी दिल्ली लोकसभा क्षेत्र का इलाका है। यहां से बीजेपी के सांसद मनोज तिवारी तीसरी बार मैदान में हैं। पीएम मोदी उनके समर्थन में जनसभा को संबोधित करेंगे। इसको लेकर तमाम तैयारियां शुरू हो गई हैं। भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश को तरफ से भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जनसभा को ऐतिहासिक मनाने के लिए युद्ध स्तर पर तैयारी की जा रही है। वहीं, दूसरी तरफ कांग्रेस नेता राहुल गांधी चांदनी चौक से इंडिया गठबंधन प्रत्याशी जयप्रकाश अग्रवाल के समर्थन में जनसभा को संबोधित करेंगे। कांग्रेस दिल्ली की सात में से तीन लोकसभा क्षेत्रों में चुनाव लड़ रही है। दिल्ली में 25 मई को मतदान होगा। दोनों पार्टियों की तरफ से अपने-अपने नेताओं की जनसभा को सफल बनाने के लिए मोटिंग्स की जा रही हैं। कार्यकर्ताओं की भीड़ जुटाने के लिए भी अलग-अलग नेताओं को जिम्मेदारी दी गई है।

युवक पर धारदार हथियार से हमला

मुरादनगर। इंदगाह कॉलोनी में मकान के बाहर लगे झालर को हाथ लगाने पर दबंगों ने युवकों की पिटाई कर दी। इसके बाद गर्दन पर धारदार हथियार से वार कर घायल कर दिया। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गांव फिरोजपुर निवासी ताज मोहम्मद पास की कॉलोनी में सिलार्इ सीखने जाता है। मंगलवार रात को वह घर जा रहा था। इंदगाह कॉलोनी में उसने एक मकान के बाहर झालर को हाथ लगा दिया। इस पर जाकिर और आरिफ ने उसकी पिटाई की। उसके दोस्त शोएब से भी मारपीट की। इतना ही नहीं ताज की गर्दन पर धारदार हथियार से वार कर दिया। एसीपी नरेश कुमार ने बताया कि जाकिर, आरिफ, रियाजुद्दीन और हुसैन पर रिपोर्ट दर्ज कर ली है। उन्होंने बताया कि पुलिस ने आरिफ और रियाजुद्दीन को गिरफ्तार कर चालान कर दिया है।

शक्ति खंड चार में सीवर ओवरफ्लो से सड़क पर भरा पानी

ट्रांस हिंडन। इंदिरापुरम स्थित शक्ति खंड चार में सीवर ओवरफ्लो होने से लोगों को समस्या का करना पड़ रहा है। सीवर का पानी सड़क पर भरने से आने-जाने में परेशानी हो रही है। गंदगी के साथ दुर्गंध भी बढ़ रही है। लोगों का कहना है कि पांच दिन से समस्या बनी हुई है। खुली हवा में सांस लेना मुश्किल हो रहा है। समस्या की बार-बार शिकायत करने पर भी सुनवाई नहीं हो रही। स्थानीय निवासी विनोद कौशिक ने बताया कि यहां आए दिन सीवर लाइन चोक हो जाती है। सफाई नहीं होने के कारण मैनहोल से गंदा पानी बाहर बहने लगता है। सीवर का पानी सड़क पर भरने से लोगों को आने-जाने में समस्या का सामना करना पड़ रहा है। कॉलोनी के लोगों को गंदी-बदबू से जूझना पड़ रहा है। कॉलोनी में मच्छर का प्रकोप भी बढ़ रहा है। इस वजह से लोग बीमारी भी हो रहे हैं। स्थानीय लोगों ने कहा कि पॉश इलाका होने के बाद भी समस्या लगातार बनी हुई है। जी डी के सहयोग अधिभारता पीयूष सिंह ने बताया कि एस्टपीपी नहीं चलने के कारण सीवर लाइन चोक हो गई थी, जिससे ठीक किया जा रहा है। लोगों की समस्या का जल्द निवारण किया जाएगा।

कन्हैया कुमार के समर्थक लगा रहे हैं गली-गली नारा

नई दिल्ली, एजेंसी। भगवान श्री कृष्ण को समर्पित यह यह जयकारा आजकल उत्तर पूर्वी दिल्ली की गलियों में काफी गुंज मचाये हुए हैं। आप समझ रहे होंगे उस इलाके में कोई कथा आदी हो रही होगी या कोई शोभायात्रा निकल रही होगी। जी नहीं दरअसल उत्तर पूर्वी दिल्ली से इंडिया गठबंधन ने कन्हैया कुमार को अपना प्रत्याशी जो बनाया है।

हालकि कन्हैया कुमार देश की सियासत में एक जाना पहचाना नाम है बावजूद इसके कांग्रेस कार्यकर्ता इस नारे का इस्तेमाल कर लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने में कामयाब हो रहे हैं। खासतौर से जब कार्यकर्ता यह नारा लगाते हैं तो महिलाएं जो घरों के बाहर भी खड़ी होती है उसका हाथ उठाकर श्रद्धा पूर्वक जवाब देती हैं और कन्हैया की टीम अपने मकसद में कामयाब हो जाती है। उत्तर पूर्वी दिल्ली संसदीय क्षेत्र से इण्डिया गठबंधन के प्रत्याशी डॉ. कन्हैया कुमार का चुनाव प्रचार धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ चुका है। उनके



प्रचार की खास बात यह है कि वे लाव लश्कर के साथ चलना पसंद नहीं करते और जिस क्षेत्र में प्रचार के लिए जाते हैं उनका प्रयास यही रहता है कि प्रचार में केवल उसी क्षेत्र के कार्यकर्ता शामिल रहें अलबत्ता उनका एक लंबी चौड़ी टीम उनके

साथ आई हुई है। जो केवल सर्बाधन कार्यकर्ताओं से सम्पर्क साधती रहती है। कन्हैया कुमार बूध भनेजमेंट पर खास तवज्जो दे रहे हैं। इस काम के लिए बाकायदा उन्होंने संगठन के लोगो के साथ

समन्वय के लिए अपनी टीम लगाई हुई है। हालांकि उत्तर पूर्वी दिल्ली के तमाम कांग्रेस कार्यकर्ता उनको मुहोम में उनके साथ जुटे हैं। वहीं आम आदमी पार्टी के नेता तथा कार्यकर्ताओं के अलावा वामपंथी संगठनों से जुड़े लोग भी इसे अपना चुनाव समझ कर अपने-अपने तरीके से लगे हुए हैं। कन्हैया कुमार का प्रचार अभियान सुबह सात बजे पदयात्रा से शुरू हो जाता है। उनका प्रयास रहता है वे साथ-साथ लगती दो विधानसभाओं में ही अपने पूरे दिन का प्रोग्राम बनाएं। नुक़द नाटकों की टीम भी उनके संदेश लोगो तक पहुंचा रही है। कार्यकर्ता रह-रहकर नारे लगाते हैं हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की। यह नारा लोकप्रिय होता जा रहा है। इस नारे के माध्यम से कार्यकर्ता उनका नाम जनता के बीच पहुँचने में सफल भी हो रहे हैं। बीते दिन उन्होंने अपना दिन बुराड़ी और तीमारपुर में बिता तो आज गोकुलपुर तथा सोमापुरी में डेरा जमाया। वहीं बुधवार को वे धोंडा विधानसभा में रहने वाले हैं।

डीयू कुलपति ने किया उधमोध्या फाउंडेशन के दूसरे एफडीपी कार्यक्रम का उद्घाटन

शोएब आलम, सद्भावना टुडे नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के उधमोध्या फाउंडेशन के दूसरे एफडीपी कार्यक्रम का आयोजन महात्मा हंसराज महाविद्यालय टीचर ट्रेनिंग सेंटर के सभ्योग से मंगलवार को विश्वविद्यालय के महर्षि कनाद भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने किया। इस अवसर पर संबोधित करते हुए प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि युवाओं को भविष्य के नौकरी चाहने वालों की अपेक्षा नौकरी देने वाले बनना है। उन्हें ऐसा बनाने के लिए शिक्षकों में नवीन मूल्योक्तन प्रथाओं को विकसित करना आवश्यक है। कुलपति ने कहा कि युवाओं को महत्वाकांक्षी लीडर बनने के लिए 4-सी यानी करेज (साहस), कम्प्युनिकेशन (संचार), कंपेशन (करुणा) और कमिटमेंट (प्रतिबद्धता) की प्रासंगिकता और इनके महत्व को समझना चाहिए। इस अवसर पर दक्षिणी परिसर से निदेशक प्रो. प्रकाश सिंह, उधमोध्या फाउंडेशन के संयुक्त डॉ. अभिषेक टंडन और हंसराज कॉलेज की प्रिंसिपल प्रोफेसर रमा सहित अनेकों शिक्षक भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर डॉ.



अभिषेक टंडन ने उधमोध्या फाउंडेशन के तत्वावधान में इनक्यूबेटेड स्टार्टअप के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की। प्रो. रमा ने उपस्थित लोगों की सकारात्मक भावना को स्वीकार करते हुए, उच्चवलय भविष्य के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विकसित भारत की भविष्य की ईमानदार प्रयासों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने अपनी कक्षा की जिम्मेदारियों से परे जाना होगा और सभी विद्यार्थियों के लिए निर्देशन और सीखने को प्रभावित करने और बढ़ाने के लिए स्कूल के भीतर अनौपचारिक और औपचारिक भूमिका निभानी होगी।

एसटीएफ टीम ने दो लुटेरे को किया गिरफ्तार, ऑटो में सवारियों को बैठाकर करते थे लूटपाट

शहजाद सैफ, सद्भावना टुडे सवांददाता नई दिल्ली। शहदरा जिले की एसटीएफ टीम ने ऑटो में सवारियों को बैठाकर लूटपाट करने वाले गिरोह का भंडाफोड़ किया है। मामले में पुलिस ने आनंद विहार इलाके से दो लुटेरे बदमाश को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं, बदमाश के कब्जे से मिली लूट गए ज्वेलरी, चाकू और वारदात में इस्तेमाल ऑटो को जब्त कर लिया गया है। आरोपी की पहचान यूपी के बिजनौर निवासी मोहम्मद शहजाद और शाहिद अनवर के तौर पर हुई है। शाहदरा के डीसीपी सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि एसटीएफ की टीम को एक गुप्त सूचना मिली थी। सूचना के आधार पर मोहम्मद शहजाद और शाहिद अनवर को गिरफ्तार किया है। दोनों के पास से लूटी गई ज्वेलरी, वारदात में इस्तेमाल चाकू और ऑटो बरामद हुआ है। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वह पैसैंजर को सस्ता किराया का झ्रॉसा देकर ऑटो में बिठाते थे और उनसे बैंग में पड़े कीमती सामान को चुरा लेते थे। अगर पैसैंजर की नजर उन पर पड़ती तो वह चाकू दिखाकर सामान लूट लेते और पैसैंजर को चलती ऑटो से फेंक कर फरार हो जाते थे। आरोपी शहजाद मूल रूप से यूपी के बिजनौर



का रहने वाला है वह गरीब परिवार से आता है। आरोपी ने बताया कि वह जीवन यापन के लिए इस्ती आ गया और यहां ऑटो चलाने लगा। इस दौरान वह आपराधिक गतिविधियों में शामिल हो गया और अपने साथियों के साथ मिलकर ऑटो में बिठाकर सवारी के साथ लूटपाट करने लगा। आरोपी के खिलाफ पहले से चोरी और खेचिंग के 14 आपराधिक मामले दर्ज हैं। साल 2023 में भी वह गिरफ्तार भी हो चुका है। जेल से रिहा होने के बाद वह

फिर से अपराधी गतिविधियों में सक्रिय हो गया। आरोपी शाहिद अहमद भी यूपी के बिजनौर का रहने वाला है। वह बिजनौर में छोटी-मोटी चोरी किया करता था। शहजाद के संपर्क में आने के बाद वह दिल्ली आ गया और यहां शहजाद के गैंग में शामिल होकर लूटपाट की वारदात को अंजाम देने लगा। उसके खिलाफ भी पहले से पांच आपराधिक मामले दर्ज हैं। साल 2023 में भी वह गिरफ्तार शहजाद के साथ उसका भी गिरफ्तारी हुई थी।

15 दिन पहले व्हाट्सएप से बुक कर सकेगे दिल्ली जू का टिकट, अगस्त तक शुरु होगी नई व्यवस्था

नई दिल्ली। दिल्ली के नेशनल जूलाजिकल पार्क में रोजाना हजारों लोग जानवरों व पक्षियों को देखने के लिए आते हैं। पहले काउंटर पर टिकट मिलता था, लेकिन अब काउंटर बंद कर दिए गए हैं। सिर्फ ऑनलाइन टिकट मिलता है। जल्द लोगों की सुविधा के लिए व्हाट्सएप से टिकट बुक करने की सुविधा शुरू की जा रही है। इसके लिए एक नंबर जारी किया जाएगा। उस नंबर पर है लिखकर भेजने पर लिंक आएगा और लिंक पर क्लिक कर आसानी से टिकट बुक कर सकेगे। इतना ही नहीं अभी सिर्फ सेम डे टिकट लेने की व्यवस्था है। वेबसाइट को अपग्रेड किया जाएगा, जिससे लोग 15 दिन पहले ही टिकट बुक कर सकेगे। यदि किसी कारणवश लोग जिस दिन टिकट बुक है उसे दिन नहीं जा सकते तो उसे रीशेड्यूल करने का ऑप्शन दिया जाएगा। अभी सिर्फ ऑनलाइन टिकट बुक करने की है व्यवस्था: पहले दिल्ली जू के प्रवेश द्वार पर काउंटर पर टिकट मिलता था लेकिन अब सिर्फ ऑनलाइन टिकट मिलता है। <https://ticket.nzp-newdelhi.gov.in> पर जाकर लोग टिकट बुक कर सकते हैं। सबसे पहले मोबाइल नंबर डालना होगा। ओटीपी आएगा। अगले पेज पर नाम जेंडर, उम्र और ईमेल आईडी डालनी है। ओटीपी डालने के बाद अगले पेज पर जाएंगे, जहां पर वयस्क, बच्चों की संख्या डालें। उसके आगे टिकट का शुल्क आ जाएगा। भुगतान कर क्यूआर कोड बुक कर सकते हैं। अभी टिकट बुकिंग की प्रक्रिया थोड़ी जटिल है। बड़ी संख्या में लोगों को असुविधा होती है। जू के बाहर अतिरिक्त पैसा लेकर टिकट बुक करने वाले दलाल घूमते रहते हैं। जो टिकट बुकिंग के नाम पर लोगों से अतिरिक्त पैसा लेते हैं। व्हाट्सएप से आसानी से बुक होगा टिकट-दिल्ली नेशनल जूलाजिकल पार्क के डायरेक्टर डॉ. संजीत कुमार ने बताया कि अगले तीन माह में व्हाट्सएप से जू का टिकट बुक करने की सुविधा शुरू करने की तैयारी की जा रही है। इसके लिए विभिन्न कंपनियों के साथ बैठक भी की गई है। एक व्हाट्सएप नंबर जारी किया जाएगा। उस नंबर पर Hi लिखकर भेजने पर लिंक आ जाएगा। लिंक पर विवरण भरने के बाद भुगतान कर आसानी से लोग टिकट बुक कर सकेंगे।

सलाम नमस्ते में आरआरआर फेस्टिवल का आयोजन

अशोक कुमार, सद्भावना टुडे सवांददाता नोएडा। इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (आईएमएस) नोएडा के सामुदायिक रेडियो सलाम नमस्ते में आरआरआर फेस्टिवल का आयोजन हुआ। बुधवार को सेक्टर 62 स्थित संस्थान परिसर में स्कूली छात्रों के साथ रिड्यूस, रीयूज एवं री-इनोवेट पर चर्चा की गयी। वहीं कार्यक्रम के दौरान रायन इंटरनेशनल स्कूल के छात्रों ने रिड्यूस, रीयूज एवं री-इनोवेट प्रोडक्ट को पेश कर स्वच्छ नोएडा स्वास्थ्य नोएडा के संदेश दिया। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए सलाम नमस्ते की स्टेशन हेड बर्षा छ्वारिया ने कहा कि सतत विकास पर केन्द्रित इस कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। इस अभियान के साथ समुदाय के सभी वर्गों को जोड़ा जाएगा। अभियान के अंत में आरआरआर चैंपियन, एक्सपर्ट एवं मित्र को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य रीयूज एवं री-इनोवेट उद्यम को बढ़ावा देना है।

बर्षा छ्वारिया ने बताया कि आज के कार्यक्रम में रायन इंटरनेशनल स्कूल के छात्रों ने पुराने प्लास्टिक की बोतलों की चूड़ी, कान की बाली, मिट्टी के आभूषण, पुराने अखबार और पेपर बैग से तैयार पेन स्टैंड आदि बनाने की कला को सबके साथ साझा किया। वहीं कक्षा 9वीं की छात्रा वान्या ने



बताया कि वे वेस्ट आउट ऑफ वेस्ट उत्पाद तैयार करती हैं, जिसे आजतक सही मुकाम नहीं मिल

पाया। मुझे आशा है कि भविष्य में अपनी प्रतिभा से उन्हें मॉजिल तक पहुंचाने में सहायता मिलेगी।

रजौरी गार्डन इलाके में तेज रफ्तार कार से टक्कर में बुजुर्ग की मौत

नई दिल्ली। वेस्ट दिल्ली के राजौरी गार्डन इलाके में रिंग रोड पर बुधवार को सड़क हादसा हो गया, जिसमें बुजुर्ग की मौत हो गई। दरअसल, यहां तेज रफ्तार कार ने बाइक को जोरदार टक्कर मार दी, जिसके बाद कार एक अन्य कार में जा टकराई। घटना में बाइक सवार बुजुर्ग की मौत हो गई। डीसीपी विचित्र वीर से मिली जानकारी के अनुसार, हादसा सुबह करीब 11 बजे हुआ। मृतक की पहचान 64 वर्षीय किशन लाल के रूप में हुई है, जो खानपुर इलाके के रहने वाले थे। घटना के बाद बुजुर्ग को दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मृतक के परिजनों का कहना है कि पुलिस सही तरह से कूह नहीं बता रही है। मृतक के परिवार में उनकी मां और बेटी हैं और वह अपने घर का पालन पोषण करने वाले अकेले व्यक्ति थे। घटना को लेकर उनके परिजन इंसाफ की मांग कर रहे हैं। पुलिस के अनुसार, कार में दो लड़कें मौजूद थे, जिनसे पुलिस पूछताछ कर रही है।

मुसलमानों और हाशिए के समुदायों के मतदान अधिकार का दमन निंदनीय: जमाअत-ए-इस्लामी हिंद

नई दिल्ली। जमात-ए-इस्लामी हिंद के उपाध्यक्ष मलिक मोहत्तसिम खान ने आरोप लगाया कि भारत में हाल के चुनावों के दौरान मुसलमानों और समाज के हाशिए पर रह रहे वर्गों को निशाना बनाकर मतदान से रोका जा रहा है। उन्होंने कहा कि हम ऐसी घटनाओं की निंदा करते हैं। जमात के उपाध्यक्ष ने कहा मीडिया रिपोर्टों से पता चलता है कि उत्तर प्रदेश के संभल जिले में, कम से कम चार मुस्लिम- बहुल गांवों के लोगों ने शिकायत की है कि राज्य पुलिस ने मतदान केंद्रों पर अकारण लाठीचार्ज किया, जिसके परिणामस्वरूप सैकड़ों मतदाता घायल हो गए। मलिक ने कहा कि, फर्रुखाबाद लोकसभा क्षेत्र के अलीगंज विधानसभा क्षेत्र के साथ-साथ आंवला लोकसभा क्षेत्र में भी कथित तौर पर कई योग्य मतदाताओं को वोट डालने से रोका गया। इसके अलावा, कन्नौज लोकसभा क्षेत्र के रसूलाबाद विधानसभा क्षेत्र में फर्जी

मतदान की अन्य चॉकाने वाली खबरें भी सामने आई हैं। निर्दोष मतदाताओं पर यह पुलिस कार्रवाई चुनावी प्रक्रिया में स्वतंत्र रूप से भाग लेने के नागरिकों के बुनियादी लोकतांत्रिक अधिकार को कमजोर करती है। लोकतंत्र में, यह आवश्यक है कि प्रत्येक नागरिक को, उनकी पृष्ठभूमि या धारणा के बावजूद, बिना किसी डर या बाधा के अपना वोट डालने के लिए प्रोत्साहित किया जाए और सुविधा प्रदान की जाए। जमात-ए-इस्लामी हिंद के उपाध्यक्ष मलिक मोहत्तसिम खान चुनाव के दौरान कई जगहों पर देखा जा रहा है कि मुसलमानों और अन्य हाशिए पर रहने वाले समुदायों को लक्षित किया जाता है और उन्हें मताधिकार से वंचित कर दिया जाता है। जमाअत-ए-इस्लामी हिंद भारत के चुनाव आयोग से इन घटनाओं की गहन जांच करने और तत्काल सुधारात्मक उपाय करने की मांग करती है। ताकि भविष्य के चुनावी चरणों में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

टेस्ट में फेल होने के डर से लापता हुए किशोर को दस माह बाद तलाशा

नोएडा, एजेंसी। टेस्ट में पेपर खराब होने के बाद फेल होने के डर से चाचा के घर से 21 जुलाई 2023 को लापता हुए किशोर को नोएडा पुलिस ने बुधवार को दिल्ली के बंगला साहिब गुरुद्वारे के पास से सकुशल बरामद कर लिया। इस दौरान किशोर कुछ दिन हरिद्वार समेत अन्य जगहों पर भी रहा। किशोर को सकुशल बरामद करने वाली टीम को डीसीपी नोएडा की ओर से 25 हजार रुपये का इनाम दिया गया है। पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह ने भी टीम का उत्साहवर्धन किया है। डीसीपी नोएडा विद्यासागर मिश्र ने बताया कि बीते साल जुलाई में सेक्टर-22 निवासी अखंड प्रताप सिंह ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि उनका 14 वर्षीय भतीजा रनवीर शाम चार बजे कोचिंग के लिए निकला था पर वह वहां नहीं पहुंचा। देर रात तक भी जब किशोर घर नहीं लौटा तो इसकी शिकायत पुलिस से की गई। मामला संबेदनशील होने के कारण किशोर के सकुशल बरामदगी के लिए दो टीमों में गिट्टि की गई। किशोर को टीमों में कई दिन तक तलाशती रहीं पर उसका कोई सुराग नहीं मिला। परिजन भी उसके साथ अनहोनी होने की आशंका जताने लगे। एक टीम लगातार इस मामले को देख रही थी। चार दिन पहले

किशोर की एक तस्वीर इंस्टाग्राम पर कुछ युवकों के साथ दिखी। इंस्टाग्राम पोस्ट की लोकेशन हरिद्वार की थी। इसके बाद एडिशनल डीसीपी की अगुवाई में टीम को हरिद्वारा के लिए रवाना किया गया। टीम ने पोस्ट में दिख रहे युवकों से जब संपर्क किया तो पता चला कि किशोर इस समय दिल्ली में है। इसके बाद टीम दिल्ली पहुंची और जब वह बंगला साहिब गुरुद्वारे से लंगर खाकर निकल रहा था तभी टीम के साथ गए उसके चाचा ने बच्चे को पहचान लिया। किशोर को उसके चाचा के सुपुर्द कर दिया गया। भतीजे को सही सलामत देख उसके चाचा गुरुद्वारे के बाहर ही उससे लिफ्टकर रोने लगे। उन्होंने पुलिस का आभार प्रकट करते हुए कहा कि उनके ऊपर एक कलंक लग गया था जिसे नोएडा पुलिस ने मिटा दिया है। पुलिस की टीम ने जब किशोर से पूछताछ की तो उसने बताया कि उसके पिता छत्तीसगढ के सरदूजा जिले के अम्बिकापुर कस्बे में कारोबार करते हैं। रनवीर का बचपन से ही पढ़ाने में मन नहीं लगता था। पहले के लिफ रनवीर के पिता ने उसे अपने भाई अखंड के पास नोएडा भेजा। अखंड प्रताप सिंह हापित्त के शिक्षक हैं। चाचा ने रनवीर का सेक्टर-22 स्थित एक निजी स्कूल में दाखिल नौवीं कक्षा में करा दिया और उसे खुद ही कोचिंग

पढ़ाने लगे। चाचा के पास आने के बाद भी किशोर का मन पढ़ाई में नहीं लगा। किशोर का स्कूल में यूनिट टेस्ट काफी खराब हुआ। उसे कम अंक आने का डर सताता लगा।

टेस्ट का परिणाम खराब आने की आशंका के चलते वह घर से कोचिंग के लिए निकला पर वह सेक्टर-37 से बस में बैठकर कर्नाट पैलेस पहुंच गया। वह बंगला साहिब गुरुद्वारे में दोनों पहर लंगर खाता और वहीं पर सो जाता। बारिश होने पर वह दिल्ली स्टेशन चला जाता। जब उसे घर की याद आती तो वह नोएडा की तरफ घूमने आ जाता। तीन सप्ताह पहले वह घूमने के लिए हरिद्वार भी गया था। इस दौरान किशोर पॉटरी का काम करने लगा था, ताकि उसका जैब खर्च भी चलता रहा। एसीपी अरविंद कुमार ने बताया कि किशोर के लापता होने की जानकारी जैसे ही बीते साल पुलिस को मिली थी तुरंत घटनास्थल और आसपास के क्षेत्र के सीसीटीवी कैमरों को चेक किया गया था। उसकी तलाशी में घर वालों को साथ लेकर सेक्टर-22 और आसपास रहने वाले करीब 800 लोगों से वार्ता की गई। डीपीओ गौतमबुद्धनगर से सेक्टर-12 स्थित साई कृपा शिशु गृह का डाटा चेक कराया गया।

प्रदेश में लोकसभा चुनाव संपन्न

देवदत्त दुबे

सोमवार को आठ लोकसभा क्षेत्र में चुनाव संपन्न होने के साथ ही प्रदेश की सभी 29 सीटों पर लोकसभा के चुनाव हो चुके हैं अब 4 जून को पता चलेगा कि भाजपा के सभी 29 सीटों को जितने के टारगेट हासिल कर पाती है या कांग्रेस कितनी सीटें जीतती है हालांकि खजुराहो लोकसभा सीट और इंदौर लोकसभा सीट पर भाजपा को बाकोबर जैसी स्थिति रही जहां कांग्रेस चुनाव मैदान में नहीं थी। दरअसल, प्रदेश में चार चरणों में लोकसभा के चुनाव हुए हर चरण अपनी अलग विशेषता लिए हुए था हर चरण में अलग-अलग मुद्दे भी गमाये रहे भाजपा और कांग्रेस के राष्ट्रीय नेताओं ने भी प्रदेश में आकर जनसभाएं की प्रादेशिक नेताओं ने भी जमकर चुनाव प्रचार किया इसके बावजूद 2019 के लोकसभा चुनाव की तरह मतदान प्रतिशत नहीं आ पाया लगभग प्रत्येक चरण में मतदान प्रतिशत कम रहा प्रथम और दूसरे चरण में कम मतदान प्रतिशत के बाद राजनीतिक दल प्रशासन और चुनाव आयोग सक्रिय हुआ और उसके बाद तीसरे और चौथे चरण में मतदान प्रतिशत बढ़ाने की कोशिश कामयाब रही लेकिन इंदौर जैसे महानगर में जो जागरूकता के लिए जाना जाता है पूरे देश में लगातार सात बार स्वच्छता में प्रथम स्थान पर आ रहा है। इसके बावजूद खबर लिखे जाने तक लगभग 52ब मतदान की जानकारी आई है इंदौर में कांग्रेस के घोषित प्रत्याशी अक्षय क्रांति बम में नामांकन पत्र वापस लेने के आखिरी दिन नामांकन पत्र वापस लिया और भाजपा में शामिल हो गए इसके बाद इंदौर में दुविधा की स्थिति बनी जो मतदान के आखिरी समय तक बनी रही हालांकि कांग्रेस पार्टी ने खुलकर नोटा के पक्ष में मतदान करने की अपील की एक तरह से प्रचार किया कोई दूसरी ओर भाजपा ने नोटा को वोट न देने के लिए पूरी जागरूकता जनता के बीच बढ़ाने की कोशिश की लेकिन मतदान प्रतिशत इन सब के बाद भी नहीं बढ़ पाया भाजपा का दावा है कि इंदौर भाजपा बड़े अंतर से जीत करेगी क्योंकि कांग्रेस मैदान में ही नहीं थी और लोग नोटा को वोट क्यों देते जबकि कांग्रेस में कब मतदान को मतदाताओं की सत्ताधारी दल से नाराजगी बताया।

बहरहाल आठ लोकसभा क्षेत्र में शाम तक लगभग 68 प्रतिशत मतदान होने की खबर है सबसे ज्यादा रतलाम लोकसभा सीट की सैलाना विधानसभा सीट पर 82 प्रतिशत मतदान हुआ है मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के गृह क्षेत्र उज्जैन में शुरुआत में धीमा मतदान हुआ लेकिन शाम तक 70 प्रतिशत से भी ज्यादा मतदान हो गया देवास में 71 प्रतिशत धार में 67 प्रतिशत खंडवा में 68 प्रतिशत खरगोन में 70 प्रतिशत मंदसौर में 71 प्रतिशत रतलाम में 70 प्रतिशत और इंदौर में 56 प्रतिशत से भी ज्यादा मतदान हुआ। मालवा का इलाका भाजपा का परंपरागत गढ़ माना जाता है इस कारण भाजपा को जीत की पूरी उम्मीद है लेकिन आरक्षित वर्ग की सीटों पर जिस तरह से कांग्रेस ने चुनौती पेश की है उसके कारण धार रतलाम और खरगोन में कांटे की टक्कर मानी जा रही है इंदौर सीट पर भाजपा दिन भर बढत बनने के लिए कसरत करती रही शुरुआती दौर में



इंदौर में कम मतदान की खबरें थी उसके बाद भाजपा नेता सक्रिय हुए लेकिन आखिरी समय में मौसम की खराबी के कारण भी मतदान प्रभावित हुआ और केवल मतदान 52 प्रतिशत के आसपास ही हो पाया है। कुल मिलाकर देर शाम तक और मतदान प्रतिशत बढ़ाने की संभावना है लेकिन आठो सीटों पर औसत 70 प्रतिशत मतदान होने की संभावना है दोनों ही दलों के अपने-अपने दावे हैं लेकिन जनता ने किसकी पक्ष में मतदान किया है यह तो 4 जून को ही पता चलेगा लेकिन प्रदेश में लोकसभा के चुनाव सभी 29 सीटों पर संपन्न हो चुके हैं जबकि देश में एक जून तक मतदान होना है। अरविंद केजरीवाल जेल से बाहर आते ही ताल ठोकने लगे हैं। वे भाजपा नेता एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की संभावनाओं पर संशय पैदा कर रहे हैं। उनकी तर्ज पर गारंटीमय हो रहे हैं। कल रविवार को उन्होंने लोक-तुभावनी 10 गारंटी दीं, वे भाजपा के लिए-खुद उनके लिए भी-तलवार की तेज धार होने वाली हैं। इनमें अन्यों की तरह ही कुछ अतिवाद हैं। जैसे चीन से जमीन लेना, दो करोड़ रोजगार

देना और हर घर को बिजली एवं गरीबों को मुफ्त बिजली देने की घोषणा। पर यह कांग्रेस के घोषणापत्र के साथ मिलकर भाजपा का धेराव बनाती है। चुनाव प्रचार के जिस एकल ध्येय से सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल को अंतरिम जमानत दी, उसमें वे धार दे रहे हैं। मोदी को उर्हीं की बोलती-बानी और कार्यशैली में जवाब दे रहे हैं।

तो क्या इसीलिए दिल्ली के मुख्यमंत्री को गिरफ्तार किया गया था ताकि वे गुजरात में विकल्प का अर्थ न बन सकें? वस्तुतः ऐसा है नहीं। स्वयं सुप्रीम कोर्ट ने भी उनकी गिरफ्तारी को वैध माना है। आबकारी मामले के मेरिट पर भी प्रतिकूल टिप्पणी नहीं की है। उनको दो जून को सम्पर्ण का आदेश दिया है। जब यह सब है ही तो फिर अंतरिम जमानत क्यों? कोर्ट का कहना है कि वे आदतन अपराधी नहीं, चुने सीएम हैं, चुनाव पांच साल में आता है। प्रचार करने देने में कोई हर्ज नहीं है। फिर झारखंड के मुख्यमंत्री रहे हेमंत सोरेन पर इसी नजरिए से विचार क्यों नहीं हुआ जबकि चुनाव उनकी भी पार्टी लड़ रही है?न्यायालय का यह

सेलेक्टिव एप्रोच आम जनमानस को पच नहीं रहा है। इसलिए भी कि ईंडी को इस ठोस दलील की उपेक्षा की गई है कि तब हरेक विचाराधीन राजनीतिक कैदी को चुनाव प्रचार के लिए जेल से बाहर करना होगा। इससे जमानत का नया आधार बनेगा। इससे समानता के सिद्धांत का विभाजन होगा। केजरीवाल की अंतरिम रिहाई इसलिए अटपटी लग रही है। अब इसका राजनीतिक-न्यायिक संदेश जो भी हो, पर दिल्ली के मुख्यमंत्री बाहर हैं। वे इंडिया गठबंधन के मजबूत और विजयी होने की अवधारणा बनाने में राहुल गांधी की आक्रामकता से मिलकर अपना योगदान दे रहे हैं। तीन चरणों के चुनावों में मर्तों की गिरावट में भाजपा की अंदरूनी लड़ाई और मोदी के भाषणों में उठाए मुद्दों के आधार पर जो परिदृश्य बन रहा है, वह सत्ता-प्रतिष्ठानों के तमाम अंगों पर पड़ने वाले दबावों को जाहिर करता है। जनता के संदर्भ में एक नए आकलन पर विचार शुरू होने का संकेत देता है। विपक्ष के लिए यह सांत्वना है। पक्ष-विपक्ष के आशावाद पर अंतिम मुहर परिणाम ही होगा।

निर्देश के बाद, एफएसएसएआई ने नेस्ले बेबी फूड उत्पादों की संरचना से संबंधित विवाद की जांच पहले ही शुरू कर दी है। और मैं यहां यह भी जोड़ना चाहूंगा, आरोपों की जांच के लिए सख्त निर्देश के बावजूद यकीन नहीं है कि वादे के मुताबिक जांच अपने तार्किक निष्कर्ष तक पहुंचेगी। यदि एफएसएसएआई ने पहले तो अपने कड़े मानक तय करने में सख्ती से काम लिया होता, फिर इसके साथ ही कड़ाई से इनको लागू किया होता, तो कोई भी विशाल खाद्य कंपनी भारतीय बाजार को इतने हल्के रूप में न लेती। मैं यहां उस बयान को दोहरा रहा हूँ- आरोपों के खंडन संबंधी नेस्ले का वह बयान स्वयं ही स्पष्ट तौर पर दोषों को उजागर करता है जब वह कहता है, 'भारत में हमें आवश्यकता है, यही कारण है कि हमने इसे मिलाया है, लेकिन उन स्तरों पर जो यहां तक कि स्थानीय नियामक द्वारा निर्दिष्ट स्तर से भी बहुत कम हैं।' यदि आप इस कथन को देखें, तो यह सवाल तुरंत उठता है कि भारत में ऐसी आवश्यकता कहाँ है जिसने कंपनी को शिशु आहार में चीनी की ज्यादा मात्रा डालने के लिए प्रेरित किया? बेबी फूड कंपनियों को भारत में बेचे जाने वाले अपने उत्पादों में अधिक चीनी मिलाने के लिए आखिर कहाँ किसने है? मैंने भारत में पोषण संबंधी संस्थाओं का कोई अध्ययन या रिपोर्ट ऐसी नहीं देखी जो शिशु आहार में ऊर्जा प्रदाता के तौर पर ज्यादा मात्रा में चीनी मिलाने की जरूरत बताता हो। वहीं, नेस्ले का कहना है कि उसने प्रति 100 ग्राम फ़ीड में केवल 7.1 ग्राम चीनी डाली है, और वह भी एफएसएसएआई द्वारा निर्धारित 13.6 ग्राम की स्वीकार्य सीमा के मुकाबले बहुत कम, यह बयान मामले का एक और गंभीर पहलू उजागर करता है।

गारंटी में शामिल हो खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता भी

देविंदर शर्मा

स्ले इंडिया के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक सुरेश नारायणन द्वारा बेबी फूड फार्मूलेशन में चीनी की अधिक मात्रा के आरोपों को 'नस्लीय तौर पर रूढ़िबद्ध धारणा' और असत्य के रूप में नकारने को संदेहास्पद के तौर पर ही लिया जाना चाहिए। मीडिया में उनके हवाले से कहा गया कि पोषण पर्याप्तता अध्ययन करने के लिए कोई स्थानीय दृष्टिकोण नहीं है। विश्व स्तर पर उम्र के हिसाब से व्यंजन तैयार किए गए हैं जहां बढ़ते बच्चों को ऊर्जा सघन उत्पादों की आवश्यकता होती है। इसलिए यूरोपीय बच्चे और भारत या दुनिया के किसी अन्य हिस्से में एक बच्चे के बीच भेद नहीं किया जाता है। नारायणन स्विटजरलैंड स्थित एनजीओ थर्ड आई और इंटरनेशनल बेबी फूड एक्शन नेटवर्क (आईबीएफएन) की रिपोर्ट में कंपनी पर दोहरे मानदंड अपनाने संबंधी आरोपों के बारे में प्रकाशित समाचारों पर प्रतिक्रिया दे रहे थे। जिसके मुताबिक यूरोप में बेचे जाने वाले उत्पादों की तुलना में भारत व विकासशील देशों में बेचे जाने वाले शिशु-आहार अनाजों (सेरेलेक) में चीनी की उच्च मात्रा विद्यमान है। 'भारत में हमें आवश्यकता है, यही कारण है कि हमने इसे शामिल किया है, लेकिन उन स्तरों पर जो स्थानीय नियामक द्वारा निर्दिष्ट की तुलना में भी बहुत कम हैं और मुझे लगता है कि किसी को भरोसा रखना होगा कि स्थानीय नियामक जानता है कि क्या है जो हम वहां डाल रहे हैं। इसलिए ऐसा नहीं है कि मानकों में यह कोई नाटकीय बदलाव किया गया है।' वे कहते हैं कि 'मातृ आहार की कुछ आदर्शों, कच्चे माल की स्थानीय उपलब्धता व स्थानीय नियामक की जरूरतों जैसी अलग-अलग धारणाओं' के आधार पर फार्मूलेशन को स्थानीय रूप से उत्पाद में ढाला जाता है।

इस बयान के जरिये जो कुछ भी कहा गया है यदि वह सच है, तो कोई कारण नहीं दिखता कि उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय को नियामक एजेंसी भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) को नेस्ले के खिलाफ 'उचित कार्रवाई' का निर्देश देना चाहिए था। निर्देश के बाद, एफएसएसएआई ने नेस्ले बेबी फूड उत्पादों की संरचना से संबंधित विवाद की जांच पहले ही शुरू कर दी है। और मैं यहां यह भी जोड़ना चाहूंगा, आरोपों की जांच के लिए सख्त निर्देश के बावजूद यकीन नहीं है कि वादे के मुताबिक जांच अपने तार्किक निष्कर्ष तक पहुंचेगी। यदि एफएसएसएआई ने पहले तो अपने कड़े मानक तय करने में सख्ती से काम लिया होता, फिर इसके साथ ही कड़ाई से इनको लागू किया होता, तो कोई भी विशाल खाद्य कंपनी भारतीय बाजार को इतने हल्के रूप में न लेती। मैं यहां उस बयान को दोहरा रहा हूँ- आरोपों के खंडन संबंधी नेस्ले का वह बयान स्वयं ही स्पष्ट तौर पर दोषों को उजागर करता है जब वह कहता है, 'भारत में हमें आवश्यकता है, यही कारण है कि हमने इसे मिलाया है, लेकिन उन स्तरों पर जो यहां तक कि स्थानीय नियामक द्वारा निर्दिष्ट स्तर से भी बहुत कम हैं।' यदि आप इस कथन को देखें, तो यह सवाल तुरंत उठता है कि भारत में ऐसी आवश्यकता कहाँ है जिसने कंपनी को शिशु आहार में चीनी की ज्यादा मात्रा डालने के लिए प्रेरित किया? बेबी फूड कंपनियों को भारत में बेचे जाने वाले अपने उत्पादों में अधिक चीनी मिलाने के लिए आखिर कहाँ किसने है? मैंने भारत में पोषण संबंधी संस्थाओं का कोई अध्ययन या रिपोर्ट ऐसी नहीं देखी जो शिशु आहार में ऊर्जा प्रदाता के तौर पर ज्यादा मात्रा में चीनी मिलाने की जरूरत बताता हो। वहीं,



नेस्ले का कहना है कि उसने प्रति 100 ग्राम फ़ीड में केवल 7.1 ग्राम चीनी डाली है, और वह भी एफएसएसएआई द्वारा निर्धारित 13.6 ग्राम की स्वीकार्य सीमा के मुकाबले बहुत कम, यह बयान मामले का एक और गंभीर पहलू उजागर करता है। इससे पता चलता है कि एफएसएसएआई के मानक कितने ढीले हैं, जिससे एक हाथी को भी गुजरने की इजाजत मिल जाती है। एफएसएसएआई को वह डेटा जारी करने के लिए कहा जाना चाहिए जिसके आधार पर उसने शिशु आहार में चीनी की स्वीकार्य सीमा निर्धारित की है। एफएसएसएआई को इससे बच निकलने नहीं दिया जा सकता है। एफएसएसएआई ने मानक तय करने के लिए 26 वैज्ञानिक समितियाँ गठित की हैं और फिर भी यदि मानदंडों में इतनी ढील दी गई है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि 'हितों का टकराव' अक्सर चर्चा की तुलना में कहीं अधिक बढ़ा है। जैसा कि वरिष्ठ विज्ञान टिप्पणीकार दिनेश सी शर्मा कहते हैं 'वर्षों से, उपभोक्ता समूह और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ उच्च नमक, चीनी और वसा वाले खाद्य उत्पादों के लिए एक अलग हेलथी लेबल की मांग कर रहे हैं, लेकिन खाद्य सुरक्षा प्राधिकरण और उद्योग ने लगातार इसका विरोध किया है।

दूसरी ओर, नियामक अकसर उद्योग की मांगों को पूरा करने और यहां तक कि उनके उत्पादों का समर्थन करने में भी तत्पर रहता है, जो कि उसके लिए अनिवार्य नहीं है।' इससे पता चल जाता है कि कार्पोरेशंस सार्वजनिक नीति को कैसे प्रभावित करते हैं। हालांकि हरेक व्यक्ति को चीनी के सेवन के प्रति सचेत रहना महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका अधिकांश हिस्सा प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में छिपा रहता है। यहां तक कि एक सजग उपभोक्ता के लिए भी अतिरिक्त चीनी की पहचान करना मुश्किल होगा। चूंकि कई अध्ययनों से पता चला है कि चीनी के लिए कम से कम 56 अलग-अलग नाम हैं जो आम तौर पर उपभोक्ताओं को धोखा देने के लिए उपयोग किए जाते हैं, लेकिन कम से कम एफएसएसएआई को इन्हें पढ़ने में सक्षम होना चाहिए और इससे होने वाले नुकसान को जानते हुए इसके उपयोग

विचार

फेक लाइक्स और फॉलोअर्स का खेल

डॉ. शशांक द्विवेदी

इंटरनेट की वजह से पूरी दुनिया ग्लोबल विलेज में तब्दील हो गयी है। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मस दुनियाभर के लोगों को आपस में जोड़ने का काम कर रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मस की लोकप्रियता और यूजर्स के एक्टिव होने की दर पिछले कुछ सालों में लगातार बढ़ी है। ऐसे में पिछले कुछ वर्षों में सोशल मीडिया पर इन्फ्लुएंसर्स की बाढ़-सी आ गई है। मगर इन सबके बीच बड़े पैमाने पर नकली फालोअर्स वाले इन्फ्लुएंसर्स का बहुत बड़ा खेल हो रहा है, जिससे आम लोग अपना नुकसान कर बैठते हैं। पिछले दिनों इंग्लैंड के पोर्ट्समाउथ विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने एक शोध में पाया कि धोखेबाज अपने फर्जी सामानों को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स की पाँपुलैरिटी और भरोसे का फायदा उठा रहे हैं, जिससे कस्टमर्स नकली प्रोडक्ट खरीद बैठते हैं। रिपोर्ट के अनुसार, सोशल मीडिया पर सक्रिय 16-60 साल की उम्र के लगभग 22 प्रतिशत कस्टमर्स ने इन्फ्लुएंसर्स के द्वारा प्रमोट किए गए सामान खरीदे, जो नकली थे। 'बहुत सी कंपनियाँ ऐसी भी हैं जो किसी इन्फ्लुएंसर्स को कहती हैं कि आप हमारे फलाना प्रोडक्ट का अपने वीडियो में जिक्र करके उसको खरीदने का लिंक डाल दीजिए। अब फेक फॉलोअर्स वाले इन्फ्लुएंसर्स पैसे के लिए बिना प्रोडक्ट को प्रयोग किए प्रमोट करते हैं और बाद में ग्राहकों को पता चलता है कि वो आइटम या तो नकली है या खराब क्वालिटी का है।

दरअसल, बड़ी सोशल मीडिया कंपनियाँ धांधली रोकने में नाकाम रही हैं। दूसरे नेटवर्क की तुलना में टिवटर ने ज्यादा फेक अकाउंट पहचाने और हटाए। टिवटर ने खरीदे गए आधे लाइक और रिट्वीट हटाए। अविश्वसनीय कंटेंट हटाने के मामले में यूट्यूब सबसे खराब पाई गई। फेसबुक फर्जी अकाउंट बनाने और ब्लॉक करने में सबसे अच्छा साबित हुआ लेकिन उसने फर्जी कंटेंट बहुत कम हटाया। इंस्टाग्राम में गडबडी करना सबसे आसान और सस्ता रहा। सच तो यह है कि फर्जीवाड़ा करने वाले लोग बड़ा पैसा कमाते हैं। धांधली करने वाले ये लोग मेजर प्लेटफॉर्म पर खलेआम अपने विज्ञापन करते हैं। सोशल मीडिया पर लाखों पोस्ट को प्रभावित किया गया। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पेड प्रमोशन के जरिये इन सेलिब्रिटीज की खूब कमाई होती है। लोग अपना ज्यादा से ज्यादा समय मोबाइल की स्क्रीन पर बिताते हैं। इनमें से ज्यादातर योगदान सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बिताए गए समय का होता है। ऐसे में अक्सर हम फेसबुक या इंस्टाग्राम स्कॉल करते समय कोई ऐड देख लेते हैं। विज्ञापन में दिखाए गए प्रोडक्ट्स को देखकर कभी-कभी उस प्रोडक्ट के बारे में और भी ज्यादा जानने की इच्छा होती है। डिजिटल एडवर्टीजमेंट पूरी तरह से इसी पर टिका हुआ होता है। सोशल मीडिया या अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर दिखाए जाने वाले एडवर्टीजमेंट के जरिये भी हम प्रोडक्ट्स खरीदने के लिए तत्पर होते हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में करीब 8 करोड़ सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स हैं। तकनीकों के अनुसार, इसमें तेजी से इजाफा हो रहा है। लेकिन चिंता की बात ये है कि इस तेजी के पीछे फेक फॉलोअर्स और व्यूज का चलन भी तेजी से बढ़ रहा है। नए-नए लोग जल्दी से बढ़ा बनने के चक्कर में पैसे देकर अपने फॉलोअर्स बढ़ाते हैं। सच बात यह है कि आज जो लोग इन्फ्लुएंसर्स हैं, उसमें से करीब 10 प्रतिशत ही अपनी मेहनत से बिना प्रमोशन का पैसा दिये यहां तक पहुंचे हैं। ये वो इन्फ्लुएंसर्स हैं, जो पुराने समय ये अब तक जगह बनाए हुए हैं, उस दौर में कंटेंट से ही लोग फॉलोअर बढ़ा सकते थे। बचे 90 प्रतिशत में से 40 से 45 प्रतिशत वो लोग हैं, जो जिस साइट पर होते हैं, उसी पर अपना प्रमोशन करते हैं और फॉलोअर्स बढ़ाते हैं। लेकिन बाकी जो 45-50 प्रतिशत इन्फ्लुएंसर्स कहलाते हैं, तो कहीं न कहीं फेक फालोअर्स, लाइक्स और व्यूज को खरीदते हैं। दरअसल हर कोई जल्दी इन्फ्लुएंसर्स बनना चाहता है। चाहते हैं, किसी तरह मोनेटाइजेशन हो जाए, हमें बड़ी कंपनियाँ अपने ब्रैंड प्रमोशन के लिए कॉल करें। दूसरे, वो लोग हैं जो फेमस हैं, लेकिन कोई प्रतियोगिता में उनसे आगे हैं तो उनसे भी आगे निकलने के लिए वह फेक फॉलोअर्स, लाइक या व्यूज खरीदते हैं। इससे आम लोगों का बड़ा नुकसान हो जाता है। रिपोर्ट ने सोशल मीडिया नेटवर्क पर क्लिक, लाइक और कमेंट बेचने वाली कंपनियों के सामने इंटरनेट कंपनियों की कमजोरी पर एक बार फिर लोगों का ध्यान खींचा है। सोशल नेटवर्क के सॉफ्टवेयर सबसे अधिक लोकप्रिय पोस्ट को प्राथमिकता देते हैं। इससे पैसा देकर जनरेट की गई गतिविधि को प्रमुख स्थान मिलता है। पैसे वाले लोग या कथित बड़े सेलिब्रिटी फेक फॉलोअर्स के खेल का बड़ा हिस्सा हैं।

एक नजर

चीन ने लागू की विदेशी पर्यटक को वीजा-मुक्त प्रवेश की नीति



बीजिंग, एअरिंसी। चीन ने बुधवार को देश के समुद्र तट के साथ सभी क़रूज जहाज बंदरगाहों के माध्यम से विदेशी पर्यटक समूहों के वीजा-मुक्त प्रवेश की अनुमति देने वाली नीति लागू की है। राष्ट्रीय आब्रजन प्रशासन (एनआईए) के अनुसार पर्यटक समूह जिनमें से प्रत्येक में दो या अधिक विदेशी होते हैं और चीनी ट्रेवल एजेंसियों द्वारा संगठित या प्राप्त होते हैं, शंघाई, तियानजिन, गुआंगज़ौ, सान्या और अन्य सहित 13 चीनी शहरों में क़रूज बंदरगाहों के माध्यम से क़रूज जहाजों पर चीन में वीजा मुक्त प्रवेश कर सकते हैं। एनआईए के एक बयान के अनुसार पर्यटक चीन में 15 दिनों से अधिक नहीं रह सकते हैं। चीन में रहते हुए वे तटीय प्रांतों, नगर पालिकाओं और स्वायत्त क्षेत्रों के साथ-साथ बीजिंग का भी दौरा कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, एनआईए ने घोषणा की कि सात क़रूज बंदरगाहों, अर्थात् डालियान, लियानयुंगंग, वेनझोउ, झोउशान, गुआंगझोउ, शेन्जेन और बेइहार्ड को 54 देशों के नागरिकों के लिए वीजा-मुक्त पारगमन बंदरगाहों के रूप में नामित किया गया है। बयान में कहा गया है कि यह कदम चीन की वीजा-मुक्त पारगमन नीति के तहत क़रूज जहाजों के माध्यम से इन बंदरगाहों से विदेशी यात्रियों के पारगमन और प्रस्थान की सुविधा प्रदान करता है। एनआईए के एक वरिष्ठ अधिकारी माओ जू के अनुसार क़रूज प्रवेश और निकास प्रक्रियाओं को और अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए एनआईए ने अन्य सेवाओं के अलावा विदेशी क़रूज यात्रियों के लिए निकासी, चालक दल लैडिंग और क़रूज रखरखाव की सुविधा पर ध्यान केंद्रित करते हुए कई उपाय पेश किए हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने गाजा में भारतीय सेना के पूर्व अधिकारी की मौत पर शोक व्यक्त किया



संयुक्त राष्ट्र, एअरिंसी। गाजा के रफह शहर में हमले की चपेट में आने के कारण संयुक्त राष्ट्र के लिए काम करने वाले भारतीय सेना के एक पूर्व अधिकारी की मौत पर संयुक्त राष्ट्र ने शोक व्यक्त करने के साथ ही भारत से माफ़ी मांगी है। कर्नल वैभव अनिल काले (46) 2022 में भारतीय सेना से समय पूर्व सेवानिवृत्त हुए थे और दो महीने पहले संयुक्त राष्ट्र के सुरक्षा एवं संरक्षा विभाग (यूएनडीएसएस) में सुरक्षा समन्वय अधिकारी नियुक्त किए गए थे। सोमवार की सुबह यूएनडीएसएस के अन्य कर्मचारियों के साथ वह संयुक्त राष्ट्र के वाहन में रफह स्थित 'यूरोपियन अस्पताल' जा रहे थे तभी हमले की चपेट में आ गए जिसमें उनकी मौत हो गई और जोर्डन का एक अन्य डीएसएस कर्मचारी घायल हो गया। समझा जाता है कि वाहन पर इजराइली टैंक की ओर से कार्रवाई की गई थी। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतिोनियो गुतेरेस के उप प्रवक्ता फरहान हक ने 'पीटीआई-भाषा' के एक सवाल के जवाब में मंगलवार को दैनिक प्रेस वार्ता में कहा, 'हम भारत की सरकार और लोगों के प्रति खेद और संवेदाना व्यक्त करते हैं। उन्होंने कहा, भारत ने जो योगदान दिया है हम उसकी सराहना करते हैं। हक ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र ने चातक हमले की जांच के लिए एक टीम का गठन किया है।

चीन की दो दिवसीय यात्रा पर जाएंगे पुतिन

मॉस्को, एअरिंसी। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने गुरुवार से दो दिवसीय चीन की यात्रा पर जाएंगे। श्री पुतिन ने चीन की न्यूज एजेंसी को साक्षात्कार में इस बात पर जोर दिया कि दोनों देशों के बीच विदेश नीतियों का समन्वय एक निष्पक्ष बहुदृष्टीय विश्व व्यवस्था की स्थापना को बढ़ावा दे रहा है। उन्होंने कहा कि दोनों देश संयुक्त रूप से संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और सुरक्षा की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। श्री पुतिन ने कहा, हम पहली बार मार्च 2010 में मिले थे और तब से हमारी नियमित रूप से बातचीत जारी है।

अमेरिका: हिंदू संगठन 'डेमोक्रेटिक थिंक टैंक' के खिलाफ एकजुट हुए



वाशिंगटन, एअरिंसी। कई हिंदू संगठन उस 'थिंक टैंक' के खिलाफ एकजुट हो गए हैं, जिसने कथित तौर पर भारतीय मूल के अमेरिकी उम्मीदवारों और अधिकारियों पर निशाना साधने वाले लोगों और समूहों को अपने एक समारोह में आमंत्रित किया है। 'थिंक टैंक'-इंडियन अमेरिकन इम्पैक्ट' द्वारा आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम, 'देसीस डिसाइड' बुधवार से शुरू हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों में यह 'थिंक टैंक' सबसे प्रभावशाली भारतीय अमेरिकी लोकतांत्रिक समूहों में से एक के रूप में उभरा है। भारतीय मूल के प्रख्यात अमेरिकी दीपक राज इसके सह-संस्थापकों में से एक हैं। हिंदू अमेरिकी पीपीसी बोर्ड के सदस्य राजीव पंडित ने कहा, ' 'इंडियन अमेरिकन इम्पैक्ट' का मुख्य उद्देश्य सभी स्तरों पर भारत और अमेरिका की राजनीतिक उपस्थिति का दर्ज कराना है लेकिन यह निराशाजनक और भ्रमित करने वाला है कि इम्पैक्ट उन संगठनों को मंच देगा जिन्होंने सार्वजनिक रूप से भारतीय मूल के अमेरिकी उम्मीदवारों पर हमला बोला है। उन्होंने कहा, ' इस समारोह के लिए आमंत्रित किए गए दो समूहों ने विशेष रूप से कई भारतीय मूल के अमेरिकी राजनेताओं को निशाना बनाया है जिनका इम्पैक्ट स्वयं समर्थन करता है!

इंडोनेशिया: बाढ़ के बाद से मलबों में लोगों की तलाश जारी, अबतक 52 शव मिले

तनाह दतार, एअरिंसी। इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप में बाढ़ की तबाही से मरने वालों की संख्या बढ़कर 52 हो गई है। बचावकर्मियों ने मंगलवार को बाढ़ प्रभावित गांवों में मलबे में लोगों की तलाश जारी रखी। जानकारी के मुताबिक मरने वालों की संख्या में बढ़ोतरी हो सकती है। मानसून की भारी बारिश, भूस्खलन और माउंट मेरापी से निकले लावे ने शनिवार आधी रात से ठीक पहले पश्चिमी सुमात्रा प्रांत के चार जिलों में कहर बरपा दिया था।

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसी के प्रवक्ता अब्दुल मुहारी ने कहा कि बाढ़ में बड़ी संख्या में लोग बह गए और घर व इमारतें जलमग्न हो गईं। 3,300 से अधिक लोगों को अस्थायी सरकारी सहायता केंद्रों में जाना पड़ा है। मुहारी ने कहा कि मंगलवार तक मलबे से 52 शवों को निकाला जा चुका है। बचावकर्मियों उन 20 लोगों की तलाश कर रहे हैं, जो लापता हैं। प्रांतीय राजधानी पंडांग में खोज और बचाव कार्यालय के प्रमुख अब्दुल मलिक ने कहा कि दूरदराज के इलाकों में अभी भी पहुंच संभव नहीं है, इसलिए मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका है। इंडोनेशिया की मौसम विज्ञान, जलवायु विज्ञान और भू-भौतिकी एजेंसी ने कहा कि आगामी दिनों में पश्चिम सुमात्रा प्रांत में और अधिक बारिश होने का अनुमान है। अगले सप्ताह तक अत्यधिक बारिश हो सकती है। इंडोनेशिया के 'सेंटर फॉर वोलकनोलॉजी एंड जियोलाॉजिकल डिजास्टर मिटिगेशन' के अनुसार, माउंट मेरापी ज्वालामुखी को



अचानक विस्फोटों के लिए जाना जाता है। मेरापी में विस्फोटों का अनुमान लगाना मुश्किल है, क्योंकि स्रोत उथला है और शिखर के पास है। मेरापी ज्वालामुखी जनवरी 2024 में एक विस्फोट के बाद से सक्रिय है।

यह इंडोनेशिया में 120 से अधिक सक्रिय ज्वालामुखी में से एक है। पैसिफिक 'रिंग ऑफ फायर' पर स्थित होने के कारण देश आए दिन भूकंप के झटकों का अनुभव करता रहता है।

कूटनीतिक वार्ता से ही नेपाल-भारत की समस्या का समाधान संभव: विदेश मंत्री श्रेष्ठ



काठमांडू, एअरिंसी। नेपाल के विदेश मंत्री नारायणकाजी श्रेष्ठ ने विश्वास व्यक्त किया है कि कूटनीतिक वार्ता के जरिये ही भारत के साथ चली आ रही समस्याओं का समाधान हो सकता है। कूटनीतिक संवाद के जरिए हल होने वाली समस्याओं का दूसरा या तीसरा विकल्प नहीं ढूंढा जाना चाहिए। नेपाल-भारत संबंधों पर नेपाल के विदेश मंत्रालय द्वारा आयोजित सेमिनार में विदेश मंत्री नारायणकाजी श्रेष्ठ ने कहा कि सदियों से रहे संबंध को छोटी-मोटी सीमा समस्या के कारण नहीं बिगड़ा जा सकता। दोनों देशों के संबंध प्रकृति द्वारा संरक्षित, सांस्कृतिक एकता से सिंचित, व्यापक, बहुआयामिक तथा अतुलनीय है। विदेश मंत्री ने कहा कि दोनों देशों के बीच कुछ समस्याएं

हैं, जो अभी की नहीं हैं बल्कि इतिहास से चलती आ रही हैं। इन समस्याओं के लिए न तो वर्तमान भारत सरकार और न ही नेपाल सरकार जिम्मेदार है। इतिहास की इन समस्याओं का समाधान कूटनीतिक संवाद के जरिए किए जाने की बात विदेश मंत्री ने कही। उन्होंने कहा कि कूटनीतिक माध्यम से इन समस्याओं का समाधान कर संबंधों को नई ऊंचाई पर पहुंचाने की आवश्यकता है। विदेश मंत्री ने कहा कि द्विदेशीय सम्बन्ध सार्वभौम समानता, शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व, सद्भावना, पारस्परिक विश्वास और समझदारी पर आधारित होने के कारण इसको और अधिक सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। दोनों देशों के बीच निरन्तर होने वाले उच्चस्तरीय भ्रमण, इन संबंधों को और ऊंचाई प्रदान करते हैं।

ट्रंप द्वारा पोर्न स्टार को धन देने के मामले में रोक के आदेश को अपीलीय अदालत ने बरकरार रखा

न्यूयॉर्क। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप द्वारा पोर्न स्टार को गुप्त रूप से धन दिए जाने संबंधी मामले में न्यूयॉर्क की अपीलीय अदालत ने गवाहों और अन्य लोगों के खिलाफ बयान देने पर लगाई गई रोक का आदेश मंगलवार को बरकरार रखा। अपीलीय अदालत के न्यायाधीश ने पाया कि ट्रंप के सार्वजनिक बयान इस मामले में मौजूदा गवाहों और संभावित गवाहों की गवाही को अखंडता के लिए बड़ा खतरा पैदा करते हैं। ट्रंप ने न्यूयॉर्क की

अपीलीय अदालत से अनुरोध किया गया था कि गवाहों और अन्य लोगों के खिलाफ बयान देने के संबंध में उन पर



लगाए गए प्रतिबंध को हटया या संशोधित किया जाए। अदालत ने ट्रंप का यह अनुरोध खारिज कर दिया।

गूगल ने जेमिनी एआई अपडेट जारी किया

सेन फ्रांसिस्को, एअरिंसी। गूगल ने कंपनी के वार्षिक डेवलपर सम्मेलन गूगल आई/ओ 2024 में अपनी एआई मॉडल श्रृंखला जेमिनी के नवीनतम नवाचारों का अपडेट जारी किया है। कंपनी ने मौजूदा प्लेगेशिय मॉडल जेमिनी 1.5 प्रो के नए संस्करण के निजी पूर्वबेलोकन की मंगलवा को घोषणा की। यह 20 लाख तक टोकन ले सकता है। जेमिनी 1.5 प्रो का नया संस्करण किसी भी व्यावसायिक रूप से उपलब्ध मॉडल के सबसे बड़े इनपुट का समर्थन करता है।

गूगल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) सुंदर पिचाई ने कहा, आज हमारे सभी दो करोड़ यूजर्स जेमिनी उत्पाद का उपयोग करते हैं। पन्द्रह लाख से अधिक डेवलपर्स हमारे टूल में जेमिनी मॉडल का उपयोग करते हैं, हम अपने उत्पादों में जेमिनी की महत्वपूर्ण क्षमताओं को भी शक्तिशाली तरीकों से ला रहे हैं। उन्होंने कहा, जेमिनी की शक्ति बहुविधता, लंबे संदर्भ और एजेंटों के साथ हमें हमारे अंतिम लक्ष्य के करीब लाती है। एआई को सभी लिए मददगार बनाना। श्री पिचाई ने सम्मेलन में कंपनी की छोटी पीढ़ी के टीपीयू, जिसे ट्रिलियम कहा जाता है, की भी घोषणा



की। उन्होंने कहा, ट्रिलियम आज तक हमारा सबसे प्रदर्शन करने वाला और सबसे कुशल टीपीयू है... हम 2024 के अंत में ट्रिलियम को अपने क्लाउड ग्राहकों के लिए उपलब्ध कराएंगे। गूगल ने कहा कि कंपनी वैश्विक स्तर पर सभी डेवलपर्स के लिए

जेमिनी 1.5 प्रो का उन्नत संस्करण लायी है। इसके अलावा दस लाखस संदर्भ के साथ जेमिनी 1.5 प्रो अब जेमिनी एडवांस्ड में उपभोक्ताओं के लिए सीधे उपलब्ध है, जिसे 35 भाषाओं में इस्तेमाल किया जा सकता है।

पेरु में बस के खाई में गिरने से तेरह लोगों की मौत

लीमा, एअरिंसी। दक्षिणी पेरु में मंगलवार को एक यात्री बस के लगभग 50 मीटर गहरी खाई में गिर जाने से कम से कम 13 लोगों की मौत हो गई और 14 अन्य घायल हो गए। स्थानीय अधिकारियों ने यह जानकारी दी है। क्षेत्रीय स्वास्थ्य निदेशालय के अयाकुचो के दक्षिणी विभाग में आपात स्थिति और आपदाओं की रोकथाम और नियंत्रण केंद्र ने कहा कि बस स्थानीय समानानुसार सुबह लगभग 6:30 बजे लिबर्टाडोरेस राजमार्ग पर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। बस लीमा से अयाकुचो शहर की ओर जा रही थी। केंद्र ने एक बयान में कहा, शुरुआती रिपोर्टों के मुताबिक अब तक 14 लोग घायल हुए हैं और 13 लोगों की मौत हो गई है। घायलों को कई क्षेत्रीय अस्पतालों में ले जाया गया।



बस ऑपरैटर सीआईवीए ने एक बयान में पुष्टि की कि उसकी एक बस अप्रत्याशित दुर्घटना में शामिल थी और पीड़ितों के परिवारों से समझदारी और धैर्य के लिए कहा और कंपनी सभी आवश्यक सहायता प्रदान

करने का प्रयास कर रही है। समाचार आउटलेट रेडियो प्रोग्रामास डेल पेरु ने कंपनी के वकील के हवाले से बताया कि दुर्घटना के समय वाहन में करीब 32 यात्री और दो चालक सवार थे।

चीनी खिलाड़ियों पर आरोपों को लेकर अमेरिकी ड्रग नीति निर्देशक का डोपिंग रोधी एजेंसी को पत्र

वाशिंगटन, एअरिंसी। अमेरिका में मादक द्रव्य नियंत्रण नीति निर्देशक ने विश्व डोपिंग रोधी एजेंसी के अधिकारियों को एक पत्र भेजा है, जिसमें कहा गया है कि दुनियाभर के नेता 2021 के तोक्यो ओलिंपिक से पहले चीनी खिलाड़ियों पर डोपिंग के आरोपों की प्रतिक्रिया के बारे में 'बहुत अधिक चिंतित' हैं।

विश्व डोपिंग रोधी एजेंसी की कार्यकारी समिति में शामिल राहुल गुसा ने आठ मई को एक पत्र में विश्व डोपिंग रोधी एजेंसी (वाडा) के अध्यक्ष को कई सिफारिशें भेजीं। इसकी एक प्रति एसोसिएटेड प्रेस को मिली हैं। सिफारिशों में इस सप्ताह के अंत से पहले कार्यकारी समिति की आपात बैठक बुलाना भी शामिल है। वाडा ने शुरुवार को अपने संस्थापक बोर्ड का एक 'असाधारण सत्र' आयोजित किया है। यह बोर्ड कार्यकारी समिति से भी बड़ा निकाय है और एजेंसी द्वारा बनाई गयी नीतियों पर निर्णय लेने का अंतिम अधिकार इसे ही है। इसमें कोई अमेरिकी सदस्य शामिल नहीं है। राष्ट्रीय औषधि नियंत्रण नीति के अमेरिकी कार्यालय के प्रमुख गुसा का पत्र इन आरोपों के मद्देनजर



आया है कि 23 चीनी तैराकों को अपना प्रदर्शन बढ़ाने वाली दवाएं लेने के बाद भी जानबूझकर क्लीन रिजल्ट दे दी गई। निर्णय के बारे में आलोचना का जवाब देते हुए वाडा ने मामले की स्वतंत्र जांच के लिए स्विटजरलैंड के एक वकील को नियुक्त किया। इसकी भी आलोचना की गई है। गुसा के पत्र में नियुक्ति की कुछ कथित खामियों को उजागर किया गया, जिसमें यह शिकायत भी शामिल है कि सरकारों का प्रतिनिधित्व करने वाले कार्यकारी

समिति के सदस्यों को पूरी तरह से जानकारी नहीं दी गई और उन्होंने जांच शुरू करने वाले औपचारिक मतदान में भाग नहीं लिया। गुसा ने मामले के विभिन्न पहलुओं पर पारदर्शिता और स्पष्टता बढ़ाने के लिए कहा। गुसा का कार्यालय वाडा को अमेरिकी कोष जारी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अमेरिकी वाडा के 2024 के पांच करोड़ अमेरिकी डॉलर के बजट में 36 लाख अमेरिकी डॉलर का योगदान करने वाला है।

करीब दो दशकों में सूर्य से निकली सबसे बड़ी सौर ज्वाला

केप कैनावरल (फ्लोरिडा)। सूर्य से मंगलवार को निकली ज्वाला, उससे अबतक लगभग दो दशकों में पैदा हुई ज्वाला में सबसे बड़ी थी। कुछ दिन पहले ही पृथ्वी पर धक्का सौर तूफान का प्रभाव पड़ा था। इसकी वजह से अज्ञात स्थानों पर चमकदार उत्तरी रोशनी पैदा हो गयी थी। 'नेशनल ओरोनिक एंड एटमोस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन' (एनओए) ने एक अद्यतन जानकारी में कहा ' 'अब तक नहीं हुआ। एनओए के अनुसार, यह 11 साल के इस सौर चक्र की सबसे बड़ी चमक है, जो अपने चरम पर पहुंच रही है। अच्छी खबर यह है कि पृथ्वी इस बार आग के प्रभाव क्षेत्र से बाहर होनी चाहिए, क्योंकि सूर्य के एक हिस्से पर भड़की ज्वाला पृथ्वी से दूर जा रही है। नासा की सोलर डायनेमिक्स वेधशाला ने ज्वाला की 'एक्स-रे' चमक को कैमरे में दर्ज किया। यह साल 2005 के बाद की सबसे गहरी चमक थी। कोलोराडो के बोल्ट्रक में एनओए के 'स्पेस वेदर प्रेडिक्शन सेंटर' में ब्रायन ब्रैशर ने कहा कि जब वैज्ञानिक अन्य स्रोतों से आंकड़े इकट्ठा करेंगे तो यह और भी चमकदार हो सकती है।

अमेरिका देगा इजराइल को एक अरब से अधिक कीमत के हथियार: अधिकारी



वाशिंगटन, एअरिंसी। बाइडन प्रशासन ने प्रमुख सांसदों से कहा है कि अमेरिका इजराइल को एक अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक कीमत के हथियार और गोला-बारूद भेजेगा। अमेरिकी संसद के तीन कर्मियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अभी यह जानकारी नहीं है कि हथियारों की यह खेप कब भेजी जाएगी। बाइडन प्रशासन द्वारा इस महीने 2,000 पाउंड दर वाले 3,500 बम की खेप इजराइल भेजने पर रोक लगा दी गई थी जिसके बाद अब अमेरिका की ओर से इजराइल के लिए हथियारों की पहली खेप भेजने का यह खुलासा किया गया है। बाइडन प्रशासन ने हथियारों की खेप भेजने पर रोक लगाने के संबंध में कहा था कि उसने इजरायल को भीड़भाड़ वाले दक्षिणी गाजा शहर रफह में अपने हमले में उन विशेष हथियारों का उपयोग करने से रोकने के लिए बमों की आपूर्ति रोक दी है। अमेरिकी कांग्रेस के कर्मियों ने कहा कि मंगलवार को घोषित किए गए हथियारों के पैकेज में टैंक गोला-बारूद के लिए लगभग 70 करोड़ अमेरिकी डॉलर, सामरिक वाहनों के लिए 50 करोड़ डॉलर और मोर्टार राउंड के लिए छह करोड़ डॉलर रकम निर्धारित है। उन्होंने नाम न छापने की शर्त पर हथियारों की आपूर्ति की जानकारी दी जिसे अभी तक सार्वजनिक नहीं किया गया है।

रूसी सेना ने सेवस्तोपोल पर बड़े पैमाने पर मिसाइल हमले को विफल किया: गवर्नर

मॉस्को, एअरिंसी। रूस की सेना ने सेवस्तोपोल शहर पर बड़े पैमाने पर मिसाइल हमले को विफल कर दिया है। गवर्नर मिखाइल रज़्जोवैव ने बुधवार को एक टेलीग्राफ चैनल में कहा कि सेवस्तोपोल के फेडोरोव्काया स्ट्रीट में एक निजी क्षेत्र में मिसाइल गिरी थी। हमले में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। श्री रज़्जोवैव ने कहा, हमारी सेना ने सेवस्तोपोल पर एक बड़े हमले को नाकाम कर दिया। फेडोरोव्काया स्ट्रीट के बारे में एक गिराई गई मिसाइल के टुकड़े एक निजी क्षेत्र में गिरे। पीड़ितों के क्षेत्र में जानकारी स्पष्ट की जा रही है। उन्होंने कहा कि वायु रक्षा बलों ने जल क्षेत्र के ऊपर और बेलबेक हवाई क्षेत्र में कई मिसाइलों को मार गिराया है। गवर्नर ने कहा, गिराए गए मिसाइलों के प्रकार को स्पष्ट किया जा रहा है और यह संभव है कि बिना विस्फोट वाले सबमिशन की खोज की जा सके।

एक नजर

नीरज चोपड़ा ने फेडरेशन कप में स्वर्ण और डीपी मनु ने जीता रजत



भुवनेश्वर, एजेंसी। ओलंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा ने बुधवार को फेडरेशन कप 2024 एथलेटिक्स मीट के पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा के फाइनल में 82.27 मीटर श्रो के साथ स्वर्ण पदक जीता। आज यहां कलिंगा स्टेडियम में हुई स्पर्धा में डीपी मनु ने 82.06 मीटर के साथ रजत पदक जीता, जबकि उत्तम बालासाहेब पाटिल ने 78.39 मीटर के प्रयास के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया। नीरज चोपड़ा ने अपने पहले प्रयास में 82 मीटर का श्रो किया, जबकि डीपी मनु ने 82.06 मीटर के श्रो के साथ इवेंट की शुरुआत की, जो इस इवेंट में उनका सर्वश्रेष्ठ श्रो भी रहा। वहीं, चोपड़ा ने अपने चौथे प्रयास में 82.27 मीटर का सर्वश्रेष्ठ श्रो किया, इसके साथ ही उन्होंने इस इवेंट में स्वर्ण पदक अपने नाम कर लिया, लेकिन आखिरी के दो श्रो उन्होंने छोड़ने का फैसला किया। एशियाई खेलों के रजत पदक विजेता किशोर जेना इस इवेंट में 75.49 मीटर श्रो के साथ पांचवें स्थान पर रहे। नीरज चोपड़ा ने स्वर्ण पदक जीतने के बाद, मैंने कुछ दिन पहले दोहा में प्रतिस्पर्धा किया था। इस दौरान वह 88.36 मीटर के श्रो के साथ प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर रहे थे। उल्लेखनीय है कि नीरज चोपड़ा और किशोर जेना, दोनों एथलीटों ने भारत के लिए पेरिस 2024 ओलंपिक कोटा पहले ही हासिल कर चुके हैं।

मैं हर समय मैदान में रहना चाहता हूँ: ऋषभ पंत

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान ऋषभ पंत ने कहा कि लंबे समय के बाद मैदान में आने पर मुझे हर किसी का समर्थन मिला और हर चीज पसंद आई। उन्होंने कहा कि मैं हर समय मैदान में रहना चाहता हूँ। लखनऊ सुपर जायंट्स खिलाफ मिली जीत के बाद पंत ने कहा, हर कोई जानता था कि मैं डेढ़ साल बाद खेल रहा हूँ। मैदान के बाहर मुझे वापसी करने के लिए लंबा इंतजार करना पड़ा। मैदान पर आने के बाद मुझे हर चीज पसंद आई। मैं अब इससे बिल्कुल भी दूर नहीं रहना चाहता। मैं हर समय मैदान पर रहना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि व्यक्तिगत रूप से



मेरे लिए मैदान पर वापस आना शानदार अनुभव था। मुझे पूरे भारत में जिस तरह का समर्थन मिला वह अदभुत था। मैं यह देख कर काफी खुश था। मैं जहां भी खेलने गया, मुझे हर व्यक्ति से समर्थन मिला। उन्होंने इस सत्र में टीम में कई तरह की समस्याओं पर कहा, हमने सत्र की शुरुआत बहुत उम्मीद के साथ की थी। हालांकि कुछ खिलाड़ियों के चोट, कई उतार-चढ़ाव और कुछ खिलाड़ियों का बिमार हो जाना हमें महंगा पड़ा। हालांकि एक फ्रेंचइजी के रूप में आप हर समय शिकायत नहीं कर सकते। आपके हाथ में जो कुछ भी है, उसका आपको सबसे अच्छा उपयोग करना होगा। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि हम प्लेऑफ बहुत करीब थे। जैसा कि आप देख सकते हैं कि आखिरी मैच तक देख हम प्लेऑफ के लिए करीबी मुकामले में हैं। आप जानते हैं कि कुछ चीजें हैं, जिन्हें आप नियंत्रित कर सकते हैं, और कुछ चीजें ऐसी हैं जिन्हें आप नियंत्रित नहीं कर सकते हैं। पिछला मैच मैं नहीं खेल सका। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि अगर मैं खेला होता तो हम निश्चित रूप से जीत जाते लेकिन मुझे लगता है कि हमारे पास क्वालिफाई करने का बेहतर अवसर होता। उन्होंने कहा कि मैंने मैदान पर लगातार अपना शत प्रतिशत देने का प्रयास किया। वह इस सत्र में 155.40 की स्ट्राइक रेट से 13 मैचों में 446 रन बनाते हुए वह दिल्ली कैपिटल्स के शीर्ष स्कोरर रहे।

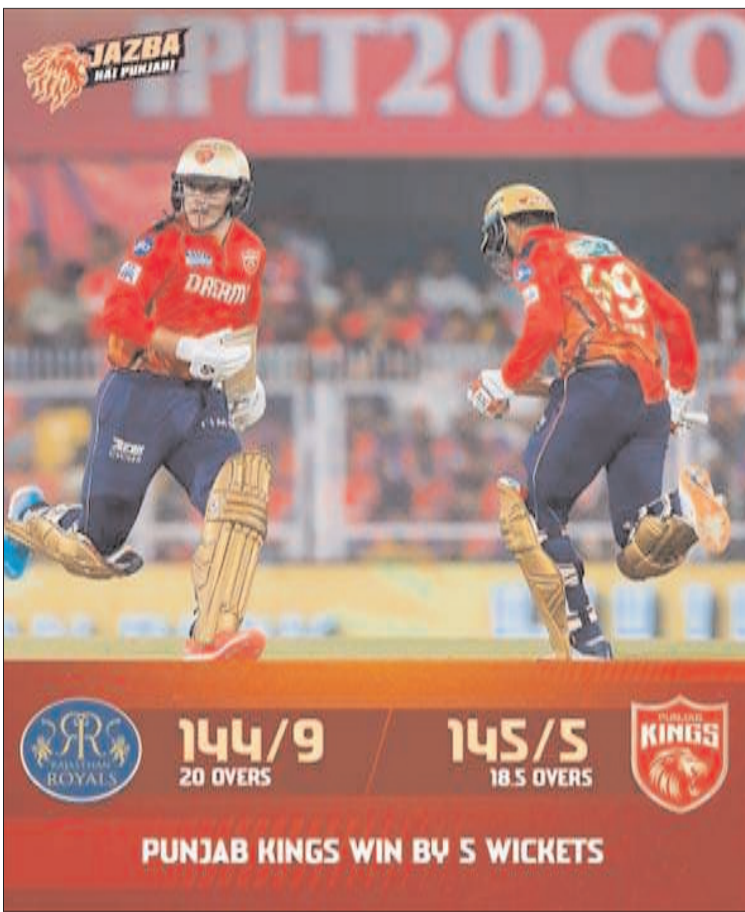
आईपीएल 2024 में बना एक और रिकॉर्ड, इस सीजन में लगे सबसे ज्यादा छके

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 17वें संस्करण ने टी20 क्रिकेट की गतिशीलता को बदल दिया है और एक के बाद एक कई रिकॉर्ड टूट रहे हैं। मंगलवार को लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ दिल्ली कैपिटल्स के मैच के दौरान, इस लीग के इतिहास के एकल संस्करण में सबसे अधिक छके लगे। दिल्ली और लखनऊ मैच के दौरान कुल 20 छके लगे। अंत में, कैपिटल्स ने 19 रन से जीत हासिल की। इन 20 छकों के साथ मौजूदा सीजन में अधिकतम छकों की कुल संख्या 1,125 हो गई, जो किसी भी सीजन में सबसे अधिक है। हालांकि यह संख्या अभी और बढ़ेगी, क्योंकि टूर्नामेंट में अभी भी कुछ मैच बाकी हैं। पिछले सीजन में छकों की कुल संख्या 1,124 थी, जबकि 2022 में 1,062 छके लगे थे। पंजाब किंग्स ने प्रतिष्ठित इंडन गार्डन्स में कोलकाता नाइट राइडर्स द्वारा रखा गए 262 रनों के लक्ष्य का पीछा किया। यह टी20 क्रिकेट के इतिहास में सबसे बड़ा सफल रन चेज है। इस मैच में एक टी20 मैच में सर्वाधिक 42 छके लगाए गए। सनराइजर्स हैदराबाद ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ आईपीएल में 3 विकेट पर 287 का सर्वोच्च स्कोर बनाकर इतिहास की किताबों में अपना नाम दर्ज कर लिया। उन्होंने मुंबई इंडियंस के खिलाफ 3 विकेट 277 का कुल स्कोर बनाकर सीजन में पहले ही रिकॉर्ड तोड़ दिया था। लखनऊ सुपर जायंट्स, जो अभी भी प्लेऑफ में जगह बनाने की दौड़ में हैं, ने 211 रन के कुल स्कोर को पार करके चेन्नई में सबसे सफल लक्ष्य हासिल किया। चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ उसी खेल में, मार्कस स्टोइनिंस ने नाबाद 124 रन की अपनी पारी के साथ लक्ष्य का पीछा करते हुए सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर का रिकॉर्ड तोड़ दिया।

पंजाब किंग्स ने राजस्थान रॉयल्स को पांच विकेट से हराया

गुवाहाटी, एजेंसी। गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के बाद कप्तान सैम करन नाबाद (63) की अर्धशतकीय पारी की बदौलत पंजाब किंग्स ने बुधवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 65वें मैच में राजस्थान रॉयल्स को पांच विकेट से हरा दिया है। 145 के छोटे लक्ष्य को हासिल करने उतरी पंजाब किंग्स की पारी शुरुआत में लड़खड़ाती नजर आई। पहले ओवर में प्रभसिमरन सिंह (4) और उसके बाद पांचवें ओवर में राइली रूसो 13 गेंदों में (22) उसी ओवर में शशांक सिंह (शून्य) पर पवेलियन लौट गये। ऐसे समय में कप्तान सैम करन ने जितेश शर्मा के साथ पारी को संभाला। जितेश शर्मा ने 20 गेंदों में 22 रन बनाये। सैम करन ने 41 गेंदों में पांच चौके और तीन छक्का लगाते हुए नाबाद (63) रनों की पारी खेले। आशुतोष शर्मा 11 गेंदों में (17) रन बनाकर नाबाद रहे। पंजाब किंग्स ने 18.5 ओवर में 145 रन बनाकर मुकाबला पांच विकेट से जीत लिया।

राजस्थान की ओर से आवेश खान और युजवंद्र चहल ने दो-दो विकेट लिये। ट्रेट बोल्ट ने एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले रियान पराग (48) और रवि अश्विन के (28) रनों की मदद से राजस्थान रॉयल्स ने पंजाब किंग्स को जीत के लिए 145 रनों का लक्ष्य दिया है। आज यहां बरसापारा क्रिकेट स्टेडियम में राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी राजस्थान की शुरुआत खराब रही और उसने पहले ही ओवर में यशस्वी जयसवाल (4) का विकेट गवां दिया। उन्हें सैम करन ने आउट किया। टीम कोहेलर और कप्तान संजू सैमसन ने पारी को संभालने का प्रयास किया। सातवें ओवर में नेथन एलिस ने संजू सैमसन (18)



को आउट कर पंजाब को दूसरी सफलता दिलाई। अगले ओवर में राहुल चाहर ने टॉम कोहेलर (18) को पवेलियन भेज दिया। रवि अश्विन ने 19 गेंदों में 28 रन बनाये। फ्रच जुरेल (शून्य), रोमन पॉवेल (4), डॉनोवन फरेरा (7), ट्रेट बोल्ट (12) रन बनाकर आउट हुये। रियान पराग ने 34 गेंदों में छह

चौकों की मदद से सर्वाधिक (48) रन बनाये। राजस्थान ने निर्धारित 20 ओवरों में 9 विकेट पर 144 रन का स्कोर खड़ा किया। पंजाब किंग्स की ओर से सैम करन, राहुल चाहर और हरप्रीत बराड ने दो-दो विकेट लिये। अर्शदीप सिंह और नेथन एलिस ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

जेक, स्टब्स और पोरेल एक अच्छी

खोज: डीसी सहायक कोच प्रवीण आमरे

नई दिल्ली। जेएसडब्ल्यू और जीएमआर की सह-स्वामित्व वाली फ्रेंचाइजी दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) ने मंगलवार को अरुण जेटली स्टेडियम में आईपीएल 2024 के अपने अंतिम लीग चरण मैच में लखनऊ सुपर जायंट्स को 19 रन से हरा दिया। अभिषेक पोरेल (33 गेंदों में 58 रन) ट्रिस्टन स्टब्स (25 गेंदों में 57 रन) के बेहतरीन अर्धशतकीय पारियों की बदौलत मेजबान टीम ने 20 ओवरों में 4 विकेट पर 208 रन का स्कोर बनाया। इसके बाद ईशांत शर्मा ने 34 रन देकर 3 विकेट लिए, जिससे घरेलू टीम ने लखनऊ सुपर जायंट्स को 189/9 पर रोक दिया और 19 रन से मैच जीत लिया। इसके साथ ही दिल्ली कैपिटल्स ने 14 मैचों में (सात जीत और सात हार) 14 अंकों के साथ अपना लीग चरण समाप्त किया।

मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में दिल्ली कैपिटल्स के सहायक कोच प्रवीण आमरे ने टीम के अभियान पर कहा, कई सकारात्मक बातें हैं। जेक, स्टब्स और पोरेल एक अच्छी खोज हैं। रसिख ने पिछले चार मैचों में अच्छा योगदान दिया। एक भारतीय गेंदबाज का योगदान कुछ खास है। हमारे सभी भारतीय गेंदबाजों ने अच्छा काम किया। जिस तरह से खलील, ईशांत और मुकेश ने गेंदबाजी की, वह एक फ्रेंचाइजी के रूप में हमारे लिए बहुत सकारात्मक था। यह साल सिर्फ इसलिए खास है क्योंकि हमने घरेलू मैदान पर कई मैच जीते और हमें जो समर्थन मिला, उसके लिए प्रशंसकों को विशेष धन्यवाद। टीम की जीत में स्टब्स के योगदान को लेकर आमरे ने कहा, वह ऐसे व्यक्ति हैं जो स्पिनरों को भी अच्छी



तरह से खेल सकते हैं। हमने जो सबसे बड़ा प्लस देखा, वह था उनका सफलता के लिए भूखे होना, वह धैर्यवान हैं, अपने लिए एक रूटीन बनाते हैं और बहुत केंद्रित हैं। कई मैचों में उन्होंने 20-22 गेंदों में पचास रन बनाए हैं, यहां तक कि लखनऊ के खिलाफ भी, 19वें ओवर में उन्होंने हमें 20 रन दिए जो जीत में मान्ये रखते हैं। आमरे ने गेंद से ईशांत के मैच जिताने वाले योगदान की भी सराहना की। उन्होंने कहा, पावरप्ले में तीन विकेट लेना बहुत कुछ कहता है। वह ऐसा व्यक्ति है जिसने 100 टेस्ट मैच खेले हैं, वह हमेशा खेलना पसंद करता है और जानता है कि दिल्ली के विकेट पर कैसे गेंदबाजी करनी है। मैं उसके लिए बहुत खुश हूँ, उसे जो भी मौका मिला, उसने हमारे लिए अच्छा किया है।

सनराइजर्स की नजरें प्लेआफ में जगह बनाने पर, प्रतिष्ठा के लिये खेलेगा गुजरात

हैदराबाद। प्रदर्शन में निरंतरता नहीं रख पाने के बावजूद सनराइजर्स हैदराबाद को इंडियन प्रीमियर लीग के प्लेआफ में जगह बनाने के लिये बुधस्मतिवार को गुजरात टाइटंस के खिलाफ सिर्फ एक जीत की जरूरत है जबकि गुजरात की टीम प्रतिष्ठा के लिये ही खेलेंगी। पेट कमिंस की टीम की नजरें हालांकि शीर्ष दो में जगह पक्की करने पर लगी है। उन्हें इसके बाद एक मैच और खेलना है और उनका नेट रनरेट 0.406 है। सनराइजर्स के 12 मैचों में 14 अंक हैं और वह अधिकतम 18 अंक हासिल कर सकती है जिससे शीर्ष दो में उसकी जगह पक्की हो जायेगी।

इस मुकामले से पहले सनराइजर्स को एक सप्ताह का ब्रेक मिला है जिससे वे तरोताजा होकर मैदान पर लौटेंगे। इसके अलावा आठ मई को लखनऊ सुपर जायंट्स पर रिकॉर्ड जीत दर्ज कराने के बाद उसके हांसले वैसे भी बुलंद है। गेंदबाजों ने लखनऊ को कम स्कोर पर रोका तो ट्रेविस हेड और अभिषेक शर्मा की सलामी जोड़ी ने 166 रन का लक्ष्य

दस विकेट बाकी रहते 9.4 ओवर में ही हासिल कर लिया। सनराइजर्स ने इस सत्र में जहां अविश्वसनीय स्कोर बनाये हैं तो शर्मनाक पराजय भी झेली है। गुजरात ने उसे टूर्नामेंट में सात विकेट से हराया था। पिछले पांच मैचों में से तीन में उसे पराजय झेलनी पड़ी। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने उसे 35 रन से, चेन्नई सुपर किंग्स ने 78 और मुंबई इंडियंस ने सात विकेट से हराया। 2016 की चैंपियन टीम बल्लेबाजी में हेड और शर्मा पर बुरी तरह निर्भर है। उनके नाकाम रहने पर उसकी पारी लड़खड़ा जाती है लिहाजा नीतिश रेड्डी, हेनरिच क्लासेन और अब्दुल समद को बेहतर प्रदर्शन करना होगा। दूसरी ओर 13 में से सिर्फ पांच मैच जीत सकी गुजरात के 11 अंक ही हैं और वह जीत के साथ विदा लेना चाहेगी। पूर्व कप्तान हार्दिक पंड्या के इस सत्र में मुंबई इंडियंस के पास लौटने के बाद गुजरात की टीम में संतुलन नजर नहीं आया। पंड्या ने 2022 की खिताबी जीत और पिछले साल फाइनल तक पहुंचने में अहम भूमिका निभाई थी।

पाकिस्तान ने आयरलैंड को छह विकेट से हराया

डबलिन। पाकिस्तान ने तीसरे टी-20 मैच में आयरलैंड को 6 विकेट से हराकर टी-20 सीरीज 2-1 से जीत लिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए आयरलैंड ने 7 विकेट के नुकसान पर 178 रन बनाए। वहीं 179 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी पाकिस्तान ने 4 विकेट के नुकसान पर 181 रन बना कर लगातार दूसरी जीत दर्ज की। वहीं पहला टी-20 मैच आयरलैंड ने जीता था।

पाकिस्तान ने टॉस जीत कर पहले फील्डिंग करने का फैसला किया। पहले बल्लेबाजी करते उतरी आयरलैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही। उसे पहला झटका 15 रन के स्कोर पर लगा। उसके ओपनर रॉस अडययर शाहीन अफरीदी की गेंद पर बोल्ट हो गए। उसके बाद इंड्यू बालबर्नी और कप्तान लोकन टकर ने पारी को संभाला। दोनों के बीच 49 गेंदों पर 85 रन की पार्टनरशिप हुई। बालबर्नी 26 गेंदों पर 35 रन बना कर आउट हो गए। वहीं टकर ने उसके बाद हैरी टेक्टर के साथ 17 गेंदों पर 32 रन की साझेदारी हुई। टकर ने 41 गेंदों पर 73 रन बनाए। जबकि टेक्टर 20 गेंदों पर नाबाद 30 रन बनाए। पाकिस्तान की ओर से शाहीन अफरीदी सबसे सफल गेंदबाज रहे। उन्होंने 4 ओवर में 14 रन देकर 3 विकेट लिए। अब्बास अफरीदी ने 4 ओवर में 43 रन देकर 2 विकेट लिए। वहीं मोहम्मद अमिर और सईम अयूब को 1-1 विकेट मिले।

मोहम्मद रिजवान और बाबर आजम के

हॉकी इंडिया ने कोचों को शिक्षित करने के उद्देश्य से लांच किया कोचिंग लेवल बेसिक कोर्स

नई दिल्ली। देश में हॉकी को सर्वोच्च संस्था हॉकी इंडिया ने बुधवार को पूर्व खिलाड़ियों सहित कोचिंग करियर बनाने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए कोचिंग लेवल बेसिक कोर्स शुरू करने की घोषणा की।

यह कोर्स हॉकी इंडिया कोचिंग एजुकेशन पाथवे डेवलपमेंट प्रोग्राम का हिस्सा है और इसका उद्देश्य इच्छुक कोचों को विकसित करना और शिक्षित करना है, जिससे उन्हें एफआईएच स्तर के कोचिंग पाठ्यक्रमों की ओर आगे बढ़ने के लिए एक मंच प्रदान किया जा सके। कोचिंग लेवल बेसिक कोर्स 24 से 29 जून 2024 तक ऑनलाइन आयोजित होने वाला है और इसमें पांच बैच शामिल होंगे, प्रत्येक में 40 उम्मीदवार होंगे। पाठ्यक्रमों के ऑनलाइन प्रारूप और अनुसूची के बारे में विवरण चयनित प्रतिभागियों को सूचित किया जाएगा।

कोचिंग लेवल बेसिक कोर्स के लिए मुख्य बिंदु

पात्रता मापदंड

- उम्मीदवारों को जिला, स्कूल या विश्वविद्यालय हॉकी टीम को कोचिंग देने का पूर्व अनुभव होना चाहिए, या उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर खेलना चाहिए या कम से कम तीन वर्षों के लिए अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय स्तर पर प्रतिनिधित्व करना चाहिए।
- अंग्रेजी भाषा में प्रवीणता - उम्मीदवारों को अंग्रेजी समझने और प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम होना चाहिए। पाठ्यक्रम विशेष रूप से उन प्रशिक्षकों या संभावित प्रशिक्षकों के लिए डिज़ाइन किए गए हैं जिन्होंने पहले किसी हॉकी इंडिया स्तर बेसिक और लेवल 1

कोचिंग कोर्स में भाग नहीं लिया है।

पाठ्यक्रम के समापन पर एक ऑनलाइन परीक्षा आयोजित की जाएगी। हॉकी इंडिया लेवल 1 कोचिंग कोर्स के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए इस परीक्षा को सफलतापूर्वक पूरा करना अनिवार्य है।

कोचिंग कोर्स लेवल बेसिक के लिए ऑनलाइन पंजीकरण 15 मई 2024 को सुबह 10:30 बजे शुरू हो गया है और 18 मई 2024 को दोपहर 3:00 बजे समाप्त होगा। कोचिंग लेवल बेसिक कोर्स को लेकर हॉकी इंडिया के अध्यक्ष डॉ. दिलीप टिकी ने कहा, यह पहले कोचों की अगली पीढ़ी के पोषण और भारत में हॉकी कोचिंग में उत्कृष्टता की संस्कृति को बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। हम पूर्व खिलाड़ियों का स्वागत करने के लिए विशेष रूप से उत्साहित हैं, जो कोचिंग भूमिकाओं में बदलाव के इच्छुक हैं, इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से, हमारा लक्ष्य उन्हें अपने कोचिंग करियर में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करना है। हॉकी इंडिया के महासचिव भोला नाथ सिंह ने कहा, हमारा मानना है कि हमारे खेल की निरंतर सफलता के लिए कोचिंग शिक्षा में निवेश करना महत्वपूर्ण है, और ये पाठ्यक्रम कोचों को उन उपकरणों के साथ सशक्त बनाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं जिनकी अगली पीढ़ी में हॉकी के प्रति जुनून को विकसित करने के लिए आवश्यकता है। हम सभी योग्य उम्मीदवारों को इस अवसर का लाभ उठाने और हमारे साथ इस समृद्ध डिजाइन किए गए हैं जिन्होंने पहले किसी हॉकी इंडिया स्तर बेसिक और लेवल 1

साक्षी मलिक ने साथी पहलवान निशा दहिया का दिल्ली हवाई अड्डे पर किया स्वागत



नई दिल्ली। पूर्व ओलंपिक पदक विजेता पहलवान साक्षी मलिक ने बुधवार को साथी पहलवान निशा दहिया का इस्तांबुल, तुर्किये से लौटने पर दिल्ली हवाई अड्डे पर स्वागत किया, जहां उन्होंने महिलाओं के 68 किग्रा वर्ग में पेरिस ओलंपिक कोटा हासिल किया था। फेसबुक पर साक्षी ने आईजीआई हवाईअड्डे पर निशा के स्वागत की तस्वीरों पोस्ट कीं, जहां निशा का परिवार और उनके दोस्त भी मौजूद थे। शुक्रवार को, निशा ने कुश्ती विश्व ओलंपिक क्वालीफायर के

फाइनल में पहुंचने के बाद ओलंपिक कोटा हासिल किया और पेरिस के लिए उड़ान भरने वाली पांचवीं महिला पहलवान बन गईं। सेमीफाइनल में चेक गणराज्य की एंडेला हेंजलिकोवा को 7-4 से हराते से पहले, निशा ने राउंड ऑफ 16 में व्यक्तिगत तटस्थ एथलीट, अंडर-23 विश्व चैंपियनशिप की पूर्व रजत पदक विजेता अलीना शौचुक को 3-0 से हराया था। निशा के अलावा, अमन सहरावत इस साल के टूर्नामेंट के अंतिम क्वालीफाइंग इवेंट में पेरिस के लिए जगह

बनाने वाले एकमात्र पुरुष पहलवान थे। एशियाई चैंपियन और अंडर-23 विश्व चैंपियन अमन पुरुषों के 57 किग्रा फ्रीस्टाइल वर्ग में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे।
Also Read - उम्र में 17 मई से और बढ़ेगी गर्मी एवं उमस
अंतिम पंचाल (53 किग्रा), विनेश फोगट (50 किग्रा), अंशु मलिक (57 किग्रा) और रीतिका हुडा (76 किग्रा) अन्य महिला पहलवान हैं, जो पेरिस ओलंपिक में पदक जीतने की कोशिश में होंगी।



बीच 139 रन की साझेदारी

179 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी पाकिस्तान की शुरुआत खराब रही। 16 रन पर उसको पहला झटका लगा। सईम अयूब 11 गेंदों पर 14 रन बना कर पवेलियन लौट गए। हालांकि, उसके बाद कप्तान बाबर आजम ने मोहम्मद

रिजवान के साथ मिलकर पारी को संभाला। दोनों के बीच दूसरे विकेट के लिए 74 गेंदों पर 139 रन की साझेदारी हुई। रिजवान ने 38 गेंदों पर 56 रन और बाबर आजम 42 गेंदों पर 75 रन बनाए। उसके बाद आजम खान ने 6 गेंदों पर नाबाद 18 रन बना कर पाकिस्तान को जीत दिलाई।

